# महालक्ष्मी पूजन विधि

*(सरल हिन्दी में त्रिसूक्त एवं कनकधारा सहित)*

**आचार्य डॉ0 ब्रजमोहन पाण्डेय**

**मूल्य : वृद्धाश्रम निर्माण एवं विकास में योगदान**

**दण्डकारण्य आश्रम**
महाश्वेता ज्योतिष संस्थान
प्लाट नं0 9, झलवा, इलाहाबाद
मोबाइल : 09415020922

## विषयानुक्रम

| | |
|---|---|
| प्राक्कथ्य (श्री एन0 के0 अग्रवाल) | **1-2** |
| आत्म निवेदन (आचार्य डॉ0 ब्रजमोहन पाण्डेय) | **3-4** |
| पर्व–परिचय | **6-8** |
| महालक्ष्मी पूजन–सामग्री | **5-5** |
| महालक्ष्मी पूजा–विधान | **9-10** |
| पूजन–विधि | **11-30** |
| पुरुष सूक्तम् | **33-36** |
| श्री सूक्तम् | **37-40** |
| श्री लक्ष्मी सूक्तम् | **41-43** |
| श्री कनकधारा स्त्रोतम् | **44-48** |
| आरती | **53-53** |
| संक्षिप्त हवन–विधान | **53-53** |
| विसर्जन | **49-49** |
| पर्व कथा | **50-52** |

# प्राक्कथ्य

आज हम इक्कीसवीं सदी के भौतिकतापूर्ण वातावरण में जी रहे हैं। भौतिकता के उन्मेष ने हमारी आवश्यकताओं को इस कदर बढ़ा दिया है कि हम उनकी पूर्ति में लाख–लाख प्रयत्न कर के भी सफल नहीं हो पाते हैं। परिणामतः हमारा ध्यान उन दैवी शक्तियों की ओर जाता है, जिनके अलौकिक संबल से हम कामनाओं की पूर्ति का विश्वास करते हैं। जीवन को सुखमय बनाने में इन देवी–देवताओं की कृपा भी महत्वपूर्ण है, ऐसा जन विश्वास है। ऐसी सकाम पूजा और कृपा–प्राप्ति, इस देश के लिए कुछ नया तो नहीं है पर आज के इस महत्वाकांक्षी युग में ऐसी पूजा–उपासना का महत्व कुछ अधिक ही होता जा रहा है। वैसे तो अतीत काल से ही यह परम्परा प्रचलित है। यहाँ प्रत्येक कार्य के शुभारम्भ में, उसकी सफलता के लिए, पूजा–पाठ का विधान अनिवार्य है। इस के पीछे भी हमारी सकाम भावना ही काम कर रही है। अपनी आत्म–तुष्टि और सुख–शान्ति के लिए हमारे मनीषियों ने अनेक देवी–देवताओं के अस्तित्व का एहसास हमें कराया है।

भारत एक आध्यात्मिक–चिन्तन प्रधान देश है। यहाँ का जीवन दर्शन ही विलक्षण है। यहाँ प्रत्येक आमोद–प्रमोद, पर्व, उत्सव और त्योहार सभी उसी आध्यात्मिक चिन्तन से अनुप्राणित हैं। वैसे तो यहाँ के प्रत्येक मास में कोई न कोई त्योहार अवश्य मनाया जाता है, पर कार्तिक मास त्योहारों की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है। पूरे मास प्रातः स्नान कर के पूजा का विधान किया गया है। कार्तिक कृष्ण पक्ष की तेरस से शुक्ल पक्ष की द्वितीया तक लगातार पाँच दिन तक पूजा–उपासना और विविध खान पान के साथ उन उत्सवों को मनाने की परम्परा आज यथावत् चल रही है। कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी को हम उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायुता की कामना से भगवान् धन्वन्तरि की पूजा करते हैं तो दूसरे दिन चतुर्दशी को अकाल मृत्यु से त्राण पाने के लिए यमराज को दीपदान करके उन्हें सन्तुष्ट करते हैं। अमावस्या को महालक्ष्मी की पूजा धन वैभव के लिए, तो महासरस्वती की पूजा सद्बुद्धि के लिए, तो महाकाली की पूजा संकटों से मुक्ति पाने के लिए विधिवत करते हैं। इस प्रकार लौकिक और आध्यात्मिक बुभुक्षा की शान्ति का प्रयास एक साथ करने से इनकी साभिप्रायता स्वतः सुस्पष्ट है। दीपावली का पर्व तो हमारे अन्तस् और बाह्य दोनों को आलोकित करने वाला विशेष पर्व है। इसके उपरान्त प्रतिपदा को गोबर्धन पूजा गोधन की महत्ता और उसकी पूज्यता की प्रतिष्ठा करती है तो भ्रातृ–द्वितीया भाई–बहन के आदर्श प्रेम और पुनीत दायित्व के निर्वहन की स्मारिका है। इस प्रकार कार्तिक मास में पर्वों की ऐसी श्रृंखला है, जो वर्ष के किसी अन्य मास में नहीं है।

मानव–जीवन को सुखी बनाने के लिए हमारे पूर्वजों ने चार पुरुषार्थों को आवश्यक बताया था। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार में धर्म को प्रथम स्थान दिया गया, क्योंकि धर्म के अभाव में तो जीवन का स्वरूप ही विकृत हो जाता है और उसका अस्तित्व भी संदिग्ध हो जाता है। द्वितीय स्थान अर्थ को देकर उन्होंने धन को उपयोगी तत्व माना है। अर्थ के बिना कामनाओं की पूर्ति असंभव है। लोक – निर्वाह में अर्थ का अपना अलग ही महत्व है। जीवन को सर्वाङ्ग सुखी बनाने में अर्थ की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इधर बढ़ती हुई भौतिकता धन को और अधिक प्राथमिकता दे रही





है। यही कारण है कि सम्प्रति धन की प्राप्ति के लिए देवी–देवताओं की पूजा भी अपेक्षाकृत अधिक हो गई है। दीपावली में लक्ष्मी, सरस्वती, कुबेर आदि देवों की कृपा से धन–वैभव की प्राप्ति और सम्पन्नता आती है। आज कल लक्ष्मी–भक्तों की संख्या में वृद्धि का यही रहस्य है। मैं इस वृद्धि को शुभ मानता हूँ, यह भारतीय संस्कृति के संरक्षण की दृष्टि से उत्तम ही है।

मैं पर्याप्त समय से यह अनुभव कर रहा हूँ कि विशेष अवसरों पर पूजकों की संख्या को देखते हुए आचार्यों का अभाव रहता है। दीपावली में तो यह समस्या और जटिल हो जाती है। अनेक दूकानों और प्रतिष्ठानों को आचार्य सुलभ नहीं हो पाते अथवा पर्याप्त इन्तजार के बाद पूजन हो पाता है। लक्ष्मी–पूजा विधिवत् सम्पन्न करने – कराने के लिए भी कठिनाई यह होती है कि पूजा–विधान संस्कृत में होने के कारण सर्वसामान्य उसे समझ ही नहीं पाता है। मेरा अपना विचार है कि पूजा–विधान सरल हो और आम आदमी के समझने योग्य होना चाहिए। ऐसा करने से घर–घर लक्ष्मी आदि देवों की पूजा का विस्तार होगा।

मैं पूजा–विधान की सरलता को लेकर किसी सुयोग्य आचार्य की खोज में तत्पर रहा और अन्त में फतेहपुर वासी डॉ0 व्रजमोहन पाण्डेय ने सरलीकृत और व्यवस्थित पूजा विधान लिखने का बीड़ा उठाया, जिसका पुस्तकाकार आपके हाथ में है। आचार्य जी हिन्दी–संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् एवं कर्मकाण्डी हैं। उन्होंने वैदिक और पौराणिक मन्त्रों का हिन्दीकरण कर के विधान को उपयोगी बना दिया है। लक्ष्मी पूजा में 'श्रीसूक्त' के महत्व को दृष्टिगत करके उसका हिन्दी पद्यानुवाद देकर आचार्य जी ने पुस्तक को अत्यन्त उपयोगी बना दिया है। भक्त जनों को पूजा में सुगमता का अनुभव होगा, ऐसा विश्वास है। इसके लिए आचार्य डॉ0 व्रजमोहन पाण्डेय साधुवाद के पात्र हैं। मैं संस्कृत निष्णात डॉ0 कामिनी पुरवार को कोटिशः धन्यवाद देता हूँ जिनका इस दिशा में प्रयास नींव के पत्थर की भाँति अविस्मरणीय है। उनका श्रीगणेश इतनी शुभता लिये हुए था कि कार्य सिद्धि करतल–गत हो गई। अन्त में सहृदय, आस्था के धनी, दानशील एवं भारतीय संस्कृति के पुजारी श्री डॉ0 अरुण कुमार के प्रति कृतज्ञता–ज्ञापन करता हूँ, जिनके सहयोग से यह धार्मिक प्रकाशन पुस्तकाकार हो सका है। लक्ष्मी जी उन्हें सुख–सम्पन्नता प्रदान करें। इस पुस्तक के प्रकाशन में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी, वे सभी महानुभाव साधुवाद के पात्र हैं। लक्ष्मी जी सभी का कल्याण करें।

श्रद्धालुजनो से निवेदन है कि जो भी त्रुटि रह गई है उसे क्षमा करें तथा सुझाव दें।

**दण्डकारण्य आश्रम**
महाश्वेता ज्योतिष संस्थान,
प्लाट नं0 9 झलवा, इलाहाबाद
09415020922

**एन0 के0 अग्रवाल**
महाश्वेता ज्योतिष संस्थान, इलाहाबाद
**रजि. कार्यालय**
43 R.A. बाजार राजीव गाँधी मार्ग, इलाहाबाद

**निवास**
स्कन्ध अर्पाटमेंट, ब्लाक–डी, ग्रउन्ड फ्लोर,
4 लूकरगंज, इलाहाबाद
09415235853, 09236001625
0532 – 2423494

# आत्म निवेदन

भारत एक समुन्नत, सांस्कृतिकगरिमा से समन्वित राष्ट्र है। यहाँ के जीवन, रहन–सहन, पर्व, उत्सव और आचार–विचार में यहाँ की संस्कृति स्पष्ट झलकती है। यहाँ के जीवन–दर्शन की विशेषता यह है कि उस के प्रत्येक पहलू में सांस्कृतिक सम्पृक्तता के लक्षण स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होते हैं। जब हम भारत में होने वाले पर्वों और त्योहारों पर दृष्टिपात करते हैं तो हमारे कथन की सत्यता स्वतः प्रमाणित हो जाती है। यह देश पर्वों और त्योहारों की बहुलता वाला देश है। यहाँ पर सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के लिए ही त्योहारों की सृष्टि हुई है। ये त्योहार उन्हीं मूल्यों के उद्घोषक जान पड़ते हैं। इन त्योहारों की तह तक जाकर इनकी साभिप्रायता का आकलन शोध का विषय है।

भारतीय संवत्सर के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक विविध पर्वों और त्योहारों का क्रम चलता रहता है। इन के पीछे कोई पौराणिक घटना, कहीं कोई महत्वपूर्ण जीवन चरित्र, कहीं सुखद ऋतु परिवर्तन का उल्लास, कहीं देशगत उत्कर्ष जैसे प्रस?. जुड़े रहते हैं। भारतीय समाज इन अवसरों पर हास–उल्लास से आह्लादित होता है और साथ ही आध्यात्मिक भूख की शान्ति के लिए पूजा–उपासना करके, परलोक सुधारने का उपक्रम भी करता है। नाग पंचमी, विजया दषमी, होली और दीवाली आदि इसी के निदर्शन हैं। कार्तिक मास में दीपावली के अतिरिक्त आदि अन्त में कई त्योहार मनाने का चलन है। इसकी अवतारणा धनतेरस से और समापन भइया–दूज पर होता है। दीपावली आलोक का पर्व है। इस अवसर पर लक्ष्मी जी की पूजा की जाती है। भारतीय लोग आज के दिन लक्ष्मी की पूजा कर, उनसे धन–सम्पत्ति की याचना करते हैं। लक्ष्मी जी की कृपा होने पर जीवन के सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं। सुख की कामना ही जीवन का परम उद्देश्य है।

दीपावली के अवसर पर सम्पूर्ण भारत में लक्ष्मी पूजन का प्रचलन है। इन पूजा–विधानों में कर्मकाण्ड–गत शिथिलता और व्यतिक्रम देखकर खेद होता है। इस में दूकानों, प्रतिष्ठानों पर होने वाले पूजा विधानों की प्रचुरता और तदनुरूप आचार्यों की संख्या में न्यूनता भी चिन्तनीय है। पूजा–विधान संस्कृत में होने के कारण कठिन भी है और संस्कृत में होने के कारण संस्कृत ज्ञान के अभाव में असंभव भी। ऐसी दशा में कर्मकाण्ड का हिन्दीकरण और सरलता अपेक्षित दृष्टिगत हुई। महाश्वेता ज्योतिष् संस्थान इलाहाबाद के संरक्षक श्री एन0 के0 अग्रवाल की प्रेरणा से इस समस्या का निदान मूर्तिमान हुआ, जो पुस्तक के रूप में आप के कर–कमलों में प्रस्तुत है। लक्ष्मी पूजा का सरलीकृत रूप घर–घर तक पहुँचाना अति आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं किया जाता तो महालक्ष्मी, गणेश और कुबेर जैसे धन के कारक देवों को जनता विस्मृत





कर देगी और दीपावली का त्योहार, विद्युद् दीपों और पटाखों की चकाचौंध बनकर रह जायेगा। धूप की सुगन्ध के स्थान पर बारूद की कटु दुर्गन्ध का ही बोलबाला हो जायेगा। इस महत् उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही सरल **'महालक्ष्मी पूजा विधान'** रचा गया है। लक्ष्मी पूजन में **'श्रीसूक्त'** की अनिवार्यता को दृष्टिगत करके **'श्रीसूक्त–पीयूषम्'** नाम से उसका पद्यानुवाद भी समाविष्ट किया गया है। सामान्य भक्तों को कठिनता का अनुभव नहीं होगा। वे लोग भी श्रद्धापूर्वक श्रीसूक्त के मूल भावों को हिन्दी छन्दों के द्वारा राग से गावेंगे और मइया की कृपा के अधिकारी बनेंगे। **'भाव प्रधानम्** आख्यातम्' पूजा में भाव की ही प्रधानता है भाषा का स्थान गौण है। पूजा में अपनी भाषा में ही भावसमर्पण कर के माता की कृपा निःसन्देह प्राप्त की जा सकती है।

प्रस्तुत कृति के लेखन में सुधी एवं संस्कृतज्ञ डॉ0 कामिनी पुखार, एम0 ए0 डी फिल0 की भूमिका सराहनीय रही है। नींव रखने का कार्य उन्होनें ही किया, जिस का पल्लवन कर के इसे स्वरूप प्रदान किया गया। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह सरल पूजा–विधान भक्तों को रुचिकर लगेगा। भारतीय संस्कृति के संरक्षण और आस्था के उन्नयन में यह कृति पूर्ण सहयोग करेगी, ऐसा विश्वास है।

मैं धर्मधुरीण, दैवज्ञ श्री एन0के0 अग्रवाल महाश्वेता ज्योतिष संस्थान, इलाहाबाद के प्रति विशेष आभारी हूँ जिनकी सत्प्रेरणा और प्रोत्साहन मुझे गतिशील बनाते हैं। उन्हें लक्ष्मी जी की कृपा का वरदान प्राप्त हो, मेरी शुभकामना है।

**''संस्कृतं संस्कृतिश्चैव श्रेयसे समुपास्यताम्''**

वि0 2065 (वसन्त पंचमी)

विदुषामनुचर

**आचार्य ब्रजमोहन पाण्डेय**

'विनीत सदन'
मु0 गदाई, खागा,
फतेहपुर (उ0 प्र0)
मो0 : 9839083553

# पर्व—परिचय

अनेकता में एकता सँजोए भिन्न–भिन्न धर्म और संस्कृति वाले हमारे देश की अलग ही पहचान है। विभिन्न प्रान्तों में भिन्न–भिन्न तीज–त्योहारों को उत्सव के रूप में मनाने की परम्परा अति प्राचीन है। इस देश के उत्सवों को मनाने की परम्परा का परिचय शोध का विषय है। वर्ष में बारहों महीने कोई न कोई त्योहार, प्रतिदिन कोई न कोई उत्सव, यही इस देश की गौरवपूर्ण संस्कृति और सभ्यता की पहचान है।

भारत की संस्कृति अति प्राचीन है। यह देश ऋषियों–मुनियों, सन्त–महात्माओं, चिन्तकों और दार्शनिकों का देश है। यहाँ पर मनीषियों द्वारा, प्रचलित पर्वों और उत्सवों के विकास के लिए, ज्ञान–बुद्धि के लिए, प्रेरणा प्राप्ति के लिए, क्लेशों से मुक्त होकर, आनन्दमय जीवन के लिए, अनेक रीति–रिवाजों का प्रचलन होता रहा है। अनादिकाल से हम इन पर्वों को हर्षोल्लास के साथ मनाते आ रहे हैं और युगधर्म के अनुरूप मनाने की विधि में परिवर्तन और संबर्धन भी होते रहे हैं।

भारतीय पर्वों एवं उत्सवों की संख्या शताधिक है, उनमें नवरात्रोत्सव, गुरुपूर्णिमा, वसन्त पंचमी, विजयादशमी, दीपावली और होली आदि विशेष महत्वपूर्ण हैं। इन उत्सवों का सांस्कृतिक महत्व तो है ही, इसके साथ ही आमोद–प्रमोद और मनोरंजन के उद्देश्य की पूर्ति भी होती है। होली जहाँ रंगों का, वसन्तोत्सव, माँ ज्ञानदायिनी सरस्वती की उपासना और ज्ञान का पर्व है तो दीपावली प्रकाश का पुनीत पर्व है।

दीपावली, पौराणिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक कथा–दीपों की संवाहिका है, यह जब आती है तो सांस्कृतिक त्योहारों की एक श्रृंखला लेकर आती है। इस अवसर पर एक के पीछे एक आने वाले कई पर्वों का सिलसिला प्रारम्भ हो जाता है, जिनकी नींव गहरी होने के साथ, लोकहित, सद्भावना और सांस्कृतिक महत्ता को अपने मूल में समाहित रखती है। कार्तिक के पर्वों का यह क्रम कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी से प्रारम्भ होता है। त्रयोदशी भगवान धन्वन्तरि की जयन्ती के रूप में तो चतुर्दशी नरकचतुर्दशी और अमां के घनान्धकार में दीपावली का उल्लासमय उत्सव मनाने की परम्परा है। दीपावली के बाद प्रतिपदा को गोबर्धन पूजा और द्वितीया को भातृ द्वितीया (भैयादूज) का पर्व भाई–बहनों के पवित्र प्रेम का निदर्शन प्रस्तुत करता है।

## धन्वन्तरि त्रयोदशी (धनतेरस)

यह पीयूषपाणि भगवान धन्वन्तरि के प्रादुर्भाव की पवित्र तिथि है, इसे **'धनतेरस'** भी कहा जाता है। धन्वन्तरि समुद्रमन्थन के अवसर पर श्वेत अमृत कलश लेकर अवतीर्ण हुए थे। यह पवित्र दिन आयुर्वेद के इस महान आचार्य के प्रति कृतज्ञता का अनुस्मारक है और अकालमृत्यु से त्राण पाने के लिए यमराज की पूजा–उपासना से भी



संबधित है। आज के दिन प्रदोष काल में यम के लिए दीपदान और नैवेद्य के समर्पण का विधान किया गया है। यह परम्परा आज तक यथावत प्रचलित है। ऐसा जनविश्वास है कि यम को दीपदान से अकालमृत्यु से रक्षा होती है। आज के ही दिन नये गणेश, लक्ष्मी, हनुमान जी की प्रतिमा तथा अन्य बर्तन सिक्का लावां लाई खरीदी जाती है।

## नरक – चतुर्दषी

कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्दषी को मनाया जाने वाला यह पर्व 'नरक चौदश' के रूप में प्रसिद्ध है। इसे 'लघु दीपावली' के नाम से भी जाना जाता है। एक पौराणिक आख्यान के आधार पर आज के दिन भगवान कृष्ण ने नरकासुर नामक दैत्य का बधकर के जनता को भयमुक्त किया था। उसी विजय की स्मृति में इस त्योहार को मनाने की परम्परा का सूत्रपात हुआ है। इस त्योहार में नरक से निवृत्ति पाने के लिए घर के बाहर चार बत्तियों से युक्त दीप जलाने का नियम है। चार बत्तियाँ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्रतीक मानी जाती हैं।

नरक चतुर्दशी का पर्व श्री हनुमत जयन्ती पर्व के रूप में भी मनाया जाता है। आज के ही दिन श्री हनुमान जी का जन्म सायं काल मेष लान में हुया था, ऐसी लोक मान्यता है।

## दीपावली

दीपावली भारत के सम्पूर्ण त्योहारों में एक महत्वपूर्ण त्योहार है। यह कार्तिक कृष्ण पक्ष स्वाती नक्षत्र व्यापिनी अमावस्या को मनाया जाने वाला अति प्राचीन पर्व है। यह प्रकाश का पर्व है। अमावस्या के घन अन्धकार में उत्साहपूर्वक शत–शत दीपों के प्रज्वलन से बाहरी अन्धकार ही नहीं वरन् अन्तस् का अन्धेरा, भी दूर भागता है। यह अन्धकार से प्रकाश की ओर आने के लिए शुभ संकल्प दिवस है। आज के दिन लोग अपने घरों को स्वच्छ और प्रकाश पूर्ण करते हैं ताकि लक्ष्मी जी उन के घरों में निवास करने आ सकें। रात्रि में दीपमालिका प्रज्वलित करके लक्ष्मी–सरस्वती और कुबेरादि देवों की पूजा–उपासना की परम्परा का घर–घर प्रचलन है। यह सार्वदेशिक और सर्वजातीय, दिव्य, आलोकमय पुनीत पर्व है। यह पर्व ''जीवेम शरदः शतम्'' का संदेश वाहक है। इस त्योहार के मनाने के संबंध में अनेक पौराणिक आख्यान प्रसिद्ध हैं। कुछ विद्वान भगवान् राम के राज्याभिषेकोत्सव से इस का श्रीगणेश मानते हैं तो कुछ लोग वामनावतार से इसे जोड़ते हैं। कुछ भी हो इतना तो सुस्पष्ट है कि वैदिक साहित्य के बाद संपूर्ण अवान्तर साहित्य में दीपावली की परम्परा अक्षुण्ण रूप से विद्यमान दीखती है।

## गोबर्धन पूजा

कार्तिक षुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को गोबर्धन पूजा और संबंधित उत्सव मनाने का रिवाज भी अति प्राचीन है। इसका प्रारम्भ भगवान् कृष्ण द्वारा गोबर्धन पर्वत के

कनिष्ठिका उँगली पर धारण करने की घटना से माना जाता है। कृष्ण भगवान् ने गोबर्धन पर्वत धारण कर ब्रजवासियों को इन्द्र के कोप से बचाया था। यह पर्व एक ओर तो सामान्य जन को स्वावलम्बन और पुरुषार्थ का पाठ पढ़ाता है तो दूसरी ओर गोवंश के प्रति श्रद्धा का भाव जागृत करता आ रहा है। भारत जैसे कृषिप्रधान देश में 'गोबर्धन–पूजा' जैसे पर्वों की महती आवश्यकता है। यह पर्व प्रेरणाप्रद एवं शुभ संदेश का वाहक है।

## भ्रातृ द्वितीया (भैया दूज)

कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को यह पर्व उल्लास पूर्वक मनाया जाता है। यह भारत के हिन्दू समाज का एक आदर्श पारिवारिक पर्व है। समाज में भाई–बहन के आदर्श प्रेम का शुभ संदेश वहन कर के इस पर्व ने हिन्दू मुस्लिम एकता का आदर्श प्रस्तुत किया है। यह पर्व भारतीय कुटुम्ब–परम्परा का प्राण है। आज के दिन बहनें अपने भाइयों को तिलक लगाकर, आरती उतारती हैं और उनकी मंगल कामना करती हैं। एक पौराणिक आख्यान के अनुसार इस दिन यम अपनी बहन यमुना के यहाँ मिलने जाया करते हैं। इसी के अनुकरण पर इस त्योहार का शुभारम्भ हुआ है। ऐसा जनविश्वास है कि जो लोग आज के दिन बहन से मिलकर, उसका सम्मान–पूजन कर आर्शीवाद प्राप्त करते और तिलक लगवाते हैं, उन्हें इस दिन मृत्यु भय नहीं रहता है। भाई–बहन के पवित्र स्नेह की महत्ता का प्रतिपादक यह पर्व धन्य है।

दीपमालिकोत्सव से पूर्व और परवर्ती उत्सवों को मिलाकर धनतेरस से लेकर भैयादूज तक पाँच पर्वों की मालिका से कार्तिक मास की धन्यता और भी बढ़ जाती है। पर्वों के इस पंचक में धन्वन्तरि, यम, महालक्ष्मी, महासरस्वती, कुबेर और विघ्न विनाशक गणेश जैसे देवों की पूजा का विधान है। इस धर्म प्राण देश में आमोद–प्रमोद के साथ ही उपासना–काण्ड का योग देकर उत्सवों की साभिप्रायता और अन्वर्थता का दृष्टिकोण सदैव समादृत रहा है। आज के बदलते युग–धर्म के कारण उत्सवगत हर्षोल्लास की अधिकता और पूजा–उपासना की गौणता होती जा रही है। पूजा–उपासना का विधान संस्कृतनिष्ठ होने के कारण भी सामान्य श्रद्धालुओं के लिए दुरूह है। संस्कृत ज्ञान के अभाव में पूजा–परम्परा लुप्त होती जा रही है। भारतीय संस्कृति के आराधकों, राष्ट्र एवं समाज के शुभचिन्तकों का ध्यानाकर्षण इस दिशा में अपेक्षित है। इसी समस्या के समाधान के लिए पूजन–विधि और लक्ष्मी–पूजन के हिन्दीकरण का लघु प्रयास किया जा रहा है। साधक जन इस पूजा विधि का अनुसरण करके आराध्य देव की कृपा के भाजन बन सकते हैं और महालक्ष्मी की कृपा का वरदान पाकर जीवन को सुखसम्पन्न बना सकते हैं।

M M M M M



# महालक्ष्मी–पूजन सामग्री

हल्दी (पिसी)
रोली
धूपबत्ती
कपूर
केसर
रक्त चन्दन
अबीर
सिन्दूर
चावल
रूई (बत्ती)
पंच पल्लव (पीपल,गूलर,पाकर आम, बरगद),
पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद, चीनी)
पंचमेवा, तुलसीदल)
जनेऊ (पाँच जोड़ा)
फूल, फूलमाला (पाँच)
रक्षासूत्र (कलावा)
घी देशी
कड़ुवा तेल
सुपारी
पान
लौंग
छोटी इलायची
दूध (गाय का)
दही
फल
बताशा

मिठाई (सफेद रंग की)
कलश (ताम्र या मिट्टी)
ताम्र की छोटी कटोरी
1 लोटा
गरी गोला–2
सफेद कपड़ा सवा मीटर
लाल कपड़ा सवा मीटर
लक्ष्मी–गणेश मूर्ति
धान का लावा (रवील)
लक्ष्मी जी के वस्त्र (चुनरी)
गणेश जी के वस्त्र
चांदी का सिक्का
कमल गट्टा 108
दूर्वा
गंगा जल
पाँच कौड़ी
सौभाग्य सामग्री (चूड़ी आदि)
इत्र की शीशी
हवन सामग्री
2 काठ की चौकियाँ
पूजन थाली
आरती
बड़ी परई (कलश)
छोटी परई – 25
गुड़
धनियाँ

M M M M M

# महालक्ष्मी—पूजा विधान

दीपावली में भगवती महालक्ष्मी की पूजा प्रमुख होती है, किन्तु उन के साथ श्रीगणेश, वरुण, नवग्रह, महाकाली, महासरस्वती, कुबेर आदि देवों का भी पूजन किया जाता है। पूजन के समय बही—खाते, कोष मंजूषा, लेखनी, दवात आदि का पूजन भी होता है। पूजन पंचोपचार या षोडश—उपचार से यथा विधि करना चाहिए। पूजा—विधान किसी आचार्य द्वारा अथवा स्वयं किया जा सकता है। पूजन में गणेश और लक्ष्मी की नई प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा करके पूजन करना चाहिए। मूर्तियाँ किसी पीठ या चौकी पर स्थापित करके गणेश जी तथा उनके दाहिने भाग में लक्ष्मी माता की मूर्ति स्थापित कर के पूजा करनी चाहिए। सामान्य जनों के लिए पूजा का सरल विधान दिया जा रहा है। लक्ष्मी जी की कृपा का वरदान पाने के लिए, परिवार के सुखमय एवं ऐश्वर्य पूर्ण जीवन के लिए उक्त विधि सुकर होगी। लक्ष्मी माता का पूजन अमावस्या को सायंकाल स्वयं या विद्वान् आचार्य के सहयोग से श्रद्धापूर्वक सम्पन्न करना चाहिए। आचार्य के अभाव में भी शुद्ध मन्त्र का उच्चारण करने में असमर्थ होने पर मन्त्रों का भाव हिन्दी अथवा अपनी मातृभाषा में कहकर श्रद्धाभाव से पूजन—समर्पण करना चाहिए। लक्ष्मी माता भाव की भूखी हैं। मन्त्रों के उच्चारण के साथ पूजन तो दिव्य ही होता है — ''अधिकस्य अधिकं फलम्।

## मण्डप विधान

सर्वप्रथम पूजा स्थल को स्वच्छता से धोकर दो काठ के पीठ अथवा चौकियाँ रखें, उस पर नया वस्त्र बिछाकर अभाव में चावलों से सुसज्जित कर के, एक पीठ पर पिछले वर्ष की लक्ष्मी—गणेश जी की मूर्तियाँ, स्थापित करें। दूसरे पीठ पर नई लक्ष्मी—गणेश जी की मूर्तियाँ, हनुमान जी को स्थापित करें। सभी मूर्तियों का मुख पश्चिम की ओर रहेगा। पहले मूर्तिमय लक्ष्मी जी, उन से बाई ओर गणेश जी, गणेश जी से बाएँ अन्य देवों की मूर्तियों रखें। पूजन कर्ता को पीठ के सामने पूर्व की ओर मुख करके आसन पर बैठना चाहिए। लक्ष्मी—गणेश विग्रह के पास चावलों पर कलश रखकर लाल वस्त्र में नारियल लपेट कर रखें, नारियल का अग्रभाग दिखाई पड़ना चाहिए। कलश में स्वास्तिक बनाकर, कण्ठ में रक्षासूत्र लपेट दें। कलश वरुण देव का प्रतीक है। पीठ पर लक्ष्मी जी के पास ही किसी पात्र में केसर मिश्रित चन्दन से अष्ट दल कमल बनाकर, उसी में द्रव्य लक्ष्मी (रजत सिक्के पर अंकित लक्ष्मी जी) रखें। पीठों





से बाई ओर पीठ रखकर लेखनी, दवात, बही खाते डायरी, पैसे रखने का गोलक (मंजूषा) आदि सामग्री, पाँच गाँठ हल्दी, कमल गट्टा, धनियॉ के दाने आदि रख दें। पूजन की सामग्री पात्र में व्यवस्थित कर के पूजन प्रारम्भ करें। पूजन से पूर्व घी का बड़ा दीपक जलाकर अपने से बाएँ; तेल का दीपक अपने दाईं ओर जलाकर रखें। दीपक चावल के ऊपर रखें। एक घी का दीपक गणेश जी के पास रखें। पूजा करते समय पकवान अपने से बाईं ओर तथा फल अपनी दाईं ओर रखना शुभ होता है।

M M M M M

# पूजन—विधि

प्रदोष काल में स्वाती नक्षत्र में वृष लग्न अथवा सभी में स्थिर लग्न सिंह में महालक्ष्मी पूजन करना श्रेयष्कर है।

इसके अतिरिक्त समयाभाव में उस दिन की उत्तम चौघड़िया देखकर भी पूजन किया जा सकता है।

महाकाली की विशेष कृपा प्राप्ति हेतु महानिशीथ काल में काली पूजन अति श्रेयष्कर हैं।

दीपावली के दिन प्रदोषकाल (सायं सूर्यास्त के बाद) से लेकर रात्रि तक स्थिर लग्न में पूजन प्रारम्भ करें। पूजन का क्रम निम्नवत् है :

**पवित्रीकरण**—सर्वप्रथम जल पात्र से जल लेकर आम के पत्ते से, या कुशा से काष्ठ पीठ में रखी हुई मूर्तियों पर, पूजा सामग्री पर, आसन तथा अपने ऊपर जल छिड़कें। मन्त्र के भावार्थ को कहते हुए, परमात्मा से निवेदन करें—

***''मनुष्य अपवित्र हो अथवा पवित्र हो, किसी भी दशा में स्थित हो, परन्तु जो कमलनयन भगवान् विष्णु का स्मरण कर लेता है, वह बाहर और भीतर, सब प्रकार से शुद्ध हो जाता है।''***

**आसन शुद्धि**—पृथ्वी पर जल छिड़कें और प्रार्थना निम्नवत करें—

हे माता पृथ्वी ! तुमने सम्पूर्ण लोकों को धारण कर रखा है और भगवान् विष्णु ने तुम को धारण किया है। हे देवि! तुम मुझे धारण करो और मेरे आसन को पवित्र कर दो।

**आचमन**—पूजा के पंचपात्र में जल लेकर तीन बार आचमन करें और प्रत्येक आचमन में निम्नलिखित वाक्य पढ़े—

ॐ आत्म तत्वं शोधयामि, ॐ केशवाय नमः।

ॐ विद्या तत्वं शोधयामि, ॐ नारायणाय नमः।

ॐ शिव तत्वं शोधयामि, ॐ माधवाय नमः।

**हस्त प्रक्षालन**—हाथ धोलें और कहें—हे पुण्डरीकाक्ष मुझे पवित्र करो।

**प्राणायाम**—सर्वप्रथम नाक के दाएँ छिद्र से श्वास खींचे और विष्णु भगवान् का ध्यान करें।

फिर नाक के बाएँ छिद्र को अनामिका और कनिष्ठिका ऊँगली से दबाकर श्वास रोकें और ब्रह्मा जी का ध्यान करें।

नाक के दाहिने छिद्र को खोलें और श्वास निकालें, शंकर जी का ध्यान करें। (आचमनी में जल लेकर आचमन करें)

**पवित्रीधारण**—दोनों हाथों की अनामिका उँगली में पैंती पहने अथवा सुवर्ण की अँगूठी दाहिने हाथ में पहन लें। ( भगवान का ध्यान कर लें )





**दीप प्रज्वलन**— दीप जलायें और दीप देव की प्रार्थना चावल, फूल लेकर करें और निम्नलिखित भावसमर्पण करें।

''हे दीप देव ! तुम को प्रणाम, आप हमारे इस कर्म के साक्षी और विघ्नों के नाशक हैं। आप पूजाकाल में उपस्थित रहने की कृपा करें। (चावल, फूल सामने छोड़ दें)

**स्वस्ति वाचन**—हाथ में जल, पुष्प, चावल लेकर हाथ जोड़े और निम्नलिखित भाव पढ़ें।

हे भगवती ! महालक्ष्मी ! हे महासरस्वती, हे महाकाली !, हे गणेश जी! सभी देव हमारा कल्याण करें। इन्द्र, पूषा, वृहस्पति, अर्यमा और वरुण आदि सभी देवता हमारा कल्याण करें। हम इन कानों से शुभ बातें सुनें, श्रवण शक्ति सौ वर्षों तक बनी रहे। हमारे नेत्र सौ साल तक शुभ देखते रहें। हमारे अंग पुष्ट हों। हम कभी दीन न हों और शतायु होवें। (इतना कहकर चावल, फूल आदि पृथ्वी पर छोड़ दें)

**शान्ति प्रार्थना**—चावल, फूल हाथ में लेकर निम्नलिखित भाव को हाथ जोड़कर पढ़ें—

हे मइया ! यह धरती, आकाश, जल, औषधि, वनस्पतियाँ आदि सब मिलकर हमें शान्ति दें। साक्षात् पर बह्म आदि सब मिलकर हमें शान्ति दें। शान्ति स्वयं हमें शान्ति दे और हमारा संबर्धन करें। हमारे अरिष्ट शान्त हों। सूर्य देवता हमारे सारे पापों को दूर करें और हमारा कल्याण करें। संभावित भय से हमें त्राण दिलावें, हमारे जन और पशुधन का सब प्रकार से कल्याण होवे।

***(इतना कहकर चावल, फूल जमीन पर छोड़ दें)***

**प्रार्थना**—(हाथ में चावल फूल लेकर गणेश जी के द्वादश नामों का स्मरण करें तथा अन्य देवों से प्रार्थना करें)

सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाशक, विनायक, धूमकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र, गजानन, इन द्वादश नामों वाले गणेश जी हमारे विघ्न दूर करें।

मैं श्वेत बसनधारी, चन्द्रकान्ति वाले, चतुर्भुज भगवान विष्णु का ध्यान करता हूँ, वे मेरे विघ्नों और बाधाओं को दूर करें।

हे नारायणी ! तुम सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलमयी हो, कल्याण दायिनी शिवा हो, सब पुरुषार्थों की सिद्धि करने वाली शरणागत—वत्सले ! हे त्रिनेत्रे! गौरी तुमको प्रणाम है। महालक्ष्मी, महाकाली, महासरस्वती को बारम्बार प्रणाम है।

(बायें हाथ में चावल लेकर दाहिने हाथ से हर 'प्रणाम' के अन्त में भूमि पर छिड़कता रहे)

श्रीगणेश जी को प्रणाम, श्री सरस्वती – बह्मा को प्रणाम, श्री लक्ष्मी नारायण को प्रणाम श्री उमा – महेश्वर को प्रणाम, श्रीशची – इन्द्र को प्रणाम, इष्टदेवों को प्रणाम, कुल देवों को प्रणाम, ग्राम देवों को प्रणाम, वास्तु देवों को प्रणाम, स्थानदेवों को प्रणाम, माता—पिता के चरणों को प्रणाम, सभी देवों को प्रणाम।

**संकल्प** – दाहिने हाथ में अक्षत (चावल) पुष्प, कुशा, जल और द्रव्य (कुछ धन) लेकर संकल्प पढ़कर भूमि पर छोड़ दें।

(संस्कृत भाषा में संकल्प पढ़ने में अक्षम होने पर, हिन्दी अथवा अपनी मातृ भाषा में ही संवत्, मास, तिथि, दिन, नाम, गोत्रादि का कथन करते हुए, पूजा करने के उद्देश्य और पूजा विधान का नाम लेकर संकल्प बोलें) संकल्प की भाषा निम्नवत् होगी—

हे विष्णु तुमको प्रणाम, तुम को प्रणाम, तुम को प्रणाम, तुम सत्य–स्वरूप हो। परमात्मन् ! तुम्हें प्रणाम।

मैं आज पुराणपुरुषोत्तम विष्णु की आज्ञा से प्रवर्तमान, श्री ब्रह्मा जी के दिन में, द्वितीय परार्ध में, श्वेत वाराह के कल्प में, वैवस्वत मन्वन्तर में, अट्ठाइसवें कलियुग के प्रथम चरण में, जम्बू द्वीप के भरतखण्ड में, आर्यावर्त के अन्तर्गत ब्रह्मावर्त के एक देश में, पुण्य क्षेत्र में, विक्रम संवत्सर में, (नाम संवत्सर) ............... नामक संवत्सर में, उत्तरायण/दक्षिणायन सूर्य में, ................. ऋतु में, ........ शुभ मास में, ............. शुभ पक्ष में, ............. शुभ वार में, ............ शुभ नक्षत्र में, सूर्य के ...... राषिस्थ होने पर ... ....... लग्न होने पर, इस प्रकार के गुणों से युक्त अमावस्या नामक तिथि में, श्रुति–स्मृति और पुराणों में बताये गये शुभ फल की प्राप्ति का इच्छुक, अप्राप्त लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए, प्राप्त लक्ष्मी के चिर काल तक संरक्षण के लिए, स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए, महालक्ष्मी, महाकाली और महासरस्वती की प्रीति के लिए, अरिष्टों की निवृत्ति के साथ आयु, आरोग्य, आयुष्य की अभिवृद्धि के लिए, व्यापार में लाभ के लिए, सुख–सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए ......................... गोत्र में उत्पन्न .................... नामक मैं, पृथ्वी, गौरी, गणेश, नवग्रह, वरुण आदि देवों की पूजापूर्वक महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, लेखनी, कुबेर आदि देवों की पूजा, यथा उपलब्ध सामग्री के द्वारा करने जा रहा हूँ, यह मेरा संकल्प है। इति।

(इतना संकल्प बोलकर हाथ में लिये हुए अक्षत, पुष्प, द्रव्य आदि भगवती लक्ष्मी माता के चरणों में समर्पित कर दें)

**पृथ्वी पूजन**– तीन बार पृथ्वी पर जल छोड़े और अक्षत, पुष्प, रोली, धूप, दीप, नैवेद्य आदि उपलब्ध सामग्री से पृथ्वी माता का पूजन करें। अन्त में चावल, फूल लेकर प्रार्थना करें। हे पृथ्वी माता! तुम सारे जीवों को आश्रय देने वाली हो। जन्म से लेकर ये सारे जीव तुम्हारी गोद में ही पल रहे हैं। तुम वृक्षों, वनस्पतियों, पर्वतों और समस्त जीवों की जीवन–दात्री हो। हे पृथ्वी माता हमारा कल्याण करो।

## गौरी–गणेश कलश की स्थापना

**आवाहन और पूजन**–सर्व प्रथम गणेश–गौरी, फिर कलश में वरुण देव का आवाहन फिर स्थापना, पांद्य, अर्घ्य, स्नान वस्त्र, हरिद्रा सिन्दूर, रोली, गुलाल, अक्षत, फूल, दूर्वा, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, ताम्बूल, पूगीफल, द्रव्य दक्षिणा, पुष्पांजलि और विशेषार्ध्य देकर प्रार्थना करें। विस्तृत पूजन निम्नवत् करें।

श्रीगणपति देव का ध्यान – हाथ में पुष्प अक्षत लेकर प्रणाम करें और निम्नलिखित भाव का कथन करें, ध्यान के बाद उनके चरणों में समर्पित करें।

हाथी के समान मुख वाले, भूतगण द्वारा सेवित, कपित्थ (कैथा) और सुस्वादु जामुन के फलों का भक्षण करने वाले, उमा के पुत्र, शोक नाशक विघ्नेश्वर के चरण–कमलों को प्रणाम करता हूँ।



**पाद्य**–(पुष्प और चम्मच में जल लेकर चढ़ायें)

चरण प्रक्षालन के लिए जल समर्पित करता हूँ।

**अर्घ्य**–(जल, पुष्प, गन्ध मिलाकर अर्पित करें)

आप के कर–कमलों में अर्घ्य अर्पित करता हूँ।

**आचमन**–(चम्मच में जल लेकर)

मुख में आचमन समर्पित करता हूँ।

**स्नान**–जल, दूध, दही, घी, मधु, शर्करा, पंचामृत आदि से गणेश जी को स्नान करावें, प्रत्येक स्नान के बाद शुद्ध जल से स्नान कराना आवश्यक है। प्रत्येक पदार्थ का नाम लेकर कहें–

श्रीगणेश जी को 'पयः स्नान,' 'दधिस्नान' समर्पित करता हूँ। (ऐसे सभी स्नानों में कहते जाय)

**वस्त्र–उपवस्त्र**–वस्त्र या उस के अभाव में रक्षा सूत्र या अक्षत चढ़ावें।

श्री गणेश जी को वस्त्र–उपवस्त्र समर्पित करता हूँ।

**आचमन**–दो बार जल छोड़कर कहें–आचमन समर्पित करता हूँ।

**यज्ञोपवीत**–श्रीगणेश जी को यज्ञोपवीत समर्पित करता हूँ।

**आचमन**–दो बार आचमन के लिए जल छोड़े और कहते जायें।

**गन्ध–समर्पण**–(हल्दी, चन्दन, सुगन्धित द्रव्य चढ़ावें)

श्री गणेश जी को सुगन्धित द्रव्य, हरिद्रा, चन्दन समर्पित करता हूँ।

**रोली–अबीर (गुलाल)**–श्री गणेश जी पर चढ़ावें और वस्तु का नाम लेकर कहते जायँ।

**अक्षत**–श्रीगणेश जी पर अक्षत (चावल) चढ़ावें, कहें–

अक्षत समर्पित करता हूँ।

**पुष्प**–पुष्प चढ़ावें और पुष्पमाला अर्पित करें और कहें–

पुष्प और पुष्पमाल अर्पित करता हूँ।

**दूर्वा**–दूर्बा चढ़ाते हुए–समर्पण वाक्य बोलें।

**धूप**–धूपबत्ती जलाकर धुपाते हुए ''समर्पण वाक्य कहें।

**दीप**–दीप जलाकर आरती करें (आरती से पूर्व और बाद में सिन्दूर चढ़ावे। जल अवश्य घुमावें–आरती के बाद हाथ धोलें)

**नैवेद्य**–नैवेद्य अर्पित करें और समर्पण वाक्य बोलें।

**आचमन**–आचमन के लिए जल छोड़ें। समर्पण वाक्य बोलें।

**ऋतुफल**–फल अर्पित करें और आचमन जल अर्पित करें। उत्तरापोऽशन के लिए जल छोड़े, पुनः करोद्वर्तन के लिए मलयचन्दन अर्पित करें (समर्पण वाक्य बोलते जायँ)

**ताम्बूल–पूगीफल**–इलायची, लौंग, सुपारी के साथ ताम्बूल अर्पित करें और समर्पण वाक्य बोलें।

**द्रव्य–दक्षिणा**–द्रव्य दक्षिणा अर्पित करें और समर्पण वाक्य बोलें।

**पुष्पांजलि**–हाथ में फूल लेकर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए समर्पण वाक्य बोलें।

**विशेषार्घ्य**–ताम्रपात्र में जल, चन्दन, अक्षत, फूल आदि लेकर विशेषार्घ्य दें, समर्पण वाक्य बोलें।

**प्रार्थना**–गणेश जी की प्रार्थना कर के साष्टांग प्रणाम करें, भाव निम्नवत् हैं–

मैं विघ्नों के ईश्वर, वरदानी, देवों के लिए अतिप्रिय, लम्बोदर, सब के हितकारी, हाथी के समान मुखवाले, श्रुति–यज्ञ से विभूषित, गौरी पुत्र गणेश जी को प्रणाम करता हूँ। अन्त में कहें–

''इस पूजा से श्री गणेश जी प्रसन्न हों, यह पूजनकर्म उन्हीं को समर्पित है।'' प्रणाम करें।

**विशेष**–गणपति और गौरी की पूजा साथ–साथ करें। समर्पण वाक्य बोलने में ''गणेश–गौरी'' को समर्पित करता हूँ ''ऐसा कहें।

**वरुण–पूजन**–महालक्ष्मी पीठ के पास ही कलश की स्थापना करें। जहाँ पर कलश रखना है, उस भूमि पर अष्टदलकमल (चौक) बनाकर सप्त–धान्य विखेरकर कलश रख दें। कलश में स्वास्तिक चिन्ह रोली से बनाकर, उस में जल भरें, आम के पत्ते रखकर, कलश के काष्ठ में रक्षा– सूत्र लपेटें। कलश में हल्दी, चन्दन, दूर्वा, कुशा, सुपारी, द्रव्य आदि डाल दें। कलश के ऊपर धान्य से पूर्ण एक पात्र रखकर, उस के ऊपर नारियल में लाल वस्त्र लपेटकर स्थापित करें, नारियल का ऊपरी भाग खुला रखें। इस के बाद कलश में वरुण देव की पूजा निम्नवत् करें।

## कलश में वरुण देव का ध्यान–आवाहन

❖ हाथ मे अक्षत, पुष्प लेकर ध्यान करें और कहें–
हे वरुणदेव! आप सर्वथा प्रशंसनीय है। ब्रह्मा जी भी हवि के द्वारा आप का यजन और वन्दन करते हैं। वे भी आप की अवहेलना नहीं कर सकते। हे देव! आप हमें बोधयुक्त (ब्रह्म ज्ञानी) बनाइये। हमारी आयु व्यर्थ न नष्ट होवे, हमारे आयुष्य में वृद्धि कीजिये। हे वरुण देवता! आप को शत–शत प्रणाम है।

❖ अक्षत–पुष्प चढ़ाते हुए कहें–
हे वरुण! मैं आप का आवाहन करता हूँ। आप सपिरवार यहाँ आकर पधारें और मेरी पूजा स्वीकार करें। आप को प्रणाम है।

❖ पुनः अक्षत पुष्प लेकर कलश में चारों वेद तथा अन्य देवी–देवताओं का आवाहन करते हुए, कहें–



कलश के मुखभाग में विष्णु, कष्ठ में रुद्र और मूल में ब्रह्मा जी, मध्यभाग में मातृगण, कुक्षि में सागर, सप्तद्वीप वाली वसुन्धरा चारों वेद और वेदांग, गंगा, यमुना, सरस्वती आदि नदियॉ, सभी सागर और तीर्थ, कलश के जल में प्रतिष्ठित होकर, हमारे पापों को दूर करें।

❖ अक्षत पुष्प कलश पर चढ़ावें।
इस के बाद सभी की पूजा, आसन, पाद्य, अर्घ्य, स्नान, आचमन वस्त्र, आचमन, यज्ञोपवीत, हल्दी, चन्दन, रोली, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, ताम्बूल, द्रव्य दक्षिणा, पुष्पांजलि, प्रार्थना आदि सुलभ उपचारों के द्वारा करें।

❖ अन्त में कलश पर जलक्षेपण करते हुए कहें–
मेरी इस पूजा से वरुणादि आवाहित देव प्रसन्न हों, यह पूजन–कर्म उन्हीं के चरणों में निवेदित है।

***(कृते नानेन पूजन –कर्मणा, वरुणादि आवाहित देवताः प्रीयन्तां, न मम)***

पूर्व

| | | |
|---|---|---|
| बुध<br>हरा | शुक्र<br>श्वेत | चन्द्र<br>श्वेत |
| बृहस्पति<br>पीला | शौर्य<br>लाल | भौम<br>लाल |
| केतु<br>काला | शनि<br>काला | राहु<br>काला |

### नवग्रह चक्र

- रोड़ी या पीली सूखी हल्दी से लाइन खींच कर नौ खाना बनाना चाहिए।
- चावल को लाल–काला–पीला–हरा रंग से रंग कर इस चक्र के समान नवग्रह बनाया जाता है अथवा नवग्रह के रंग से नवग्रह बनाया जाता है।
- चन्द्रमा तथा शुक्र को सफेद चावल रख कर स्वरूप बनाना चाहिए।
- यदि स्वरूप बनाने में कठिनाई हो, तो अक्षत पुंज रखकर उसी पर नवग्रह का आवाहन–पूजन करना चाहिए।

**सूर्य**–ॐ सूर्याय नमः, सूर्यम् आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि।
**चन्द्रमा**–ॐ चन्द्राय नमः–चन्दमसम् आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि।
**भौम**–ॐ भौमाय नमः–भौमम् आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि।
**बुध**–ॐ बुधाय नमः–बुधम् आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि।
**गुरु**–ॐ गुरवे नमः–गुरुम् आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि।

**शुक्र**–ॐ शुक्राय नमः–शुक्रम् आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि।
**शनि**–ॐ शनैश्चराय नमः–शनिम् आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि।
**राहु**–ॐ राहवे नमः–राहुम् आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि।
**केतु**–ॐ केतवे नमः–केतुम् आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि।
तीन बार जल छोड़े–

ॐ पादयोः पाद्यम्
ॐ हस्तयोः अर्घ्यम्
ॐ मुखे आचमनीयं जलम्
ॐ सर्वांगे स्नानीयं जलं समर्पयामि।

**हल्दी**–ॐ गन्धं समर्पयामि।
**अक्षत** –ॐ अक्षतं समर्पयामि।
**पुष्प**–ॐ पुष्पाणि समर्पयामि।
**धूप**–ॐ धूपं आघ्रापयामि।
**दीप**–ॐ दीपं समर्पयामि।
**हाथ धोकर**–नैवेद्यं निवेदयामि।
**आचमनीयं जलं**– नैवेद्यान्तें आचमनीयं जलम्।
**फल**–ऋतु फलं समर्पयामि ।
**पान सुपाड़ी**–मुख शुद्धध्यर्थं ताम्बूलं पुंगीफलं समर्पयामि।
**दक्षिण**–दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि।
प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।

## प्रार्थना

ब्रह्मा मुरारिः त्रिपुरान्तकारी,
भानु शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः,
सर्वे ग्रहा शान्ति करा भवन्तु।

***इति***

# षोडश मातृका चक्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| 17 आत्मनः कुलवदेवताः | 13 लोकमातर | 9 देवसेना | 5 मेधा |
| 16 तुष्टिः | 12 मातरः | 8 जया | 4 शची |
| 15 पुष्टिः | 11 स्वाहा | 7 विजया | 3 पद्मा |
| 14 धृतिः | 10 स्वधा | 6 सवित्री | 2 गौरी / 1 गणेश |

**षोडश मातृका पूजन**

❖ बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से 17 खाने में थोड़ा–थोड़ा छिड़कें, आवाहन प्रतिष्ठा करें–

1. ओम् गणपतये नमः – गणपतिमावाहयामि – स्थापयामि – पूजयामि
2. ओम् गौर्यै नमः – गौरीमावाहयामि – स्थापयामि – पूजयामि
3. ओम् पद्मायै नमः – पद्ममावाहयामि – स्थापयामि – पूजयामि
4. ओम् शच्यै नमः – शचीमावाहयामि – स्थापयामि – पूजयामि
5. ओम् मेधायै नमः – मेधामावाहयामि – स्थापयामि – पूजयामि
6. ओम् सावित्र्यै नमः – सावित्रीमावाहयामि – स्थापयामि – पूजयामि
7. ओम् विजयायै नमः – विजयामावाहयामि – स्थापयामि – पूजयामि
8. ओम् जयायै नमः – जयामावाहयामि – स्थापयामि – पूजयामि
9. ओम् देवसेनायै नमः – देवसेनामावाहयामि – स्थापयामि – पूजयामि
10. ओम् स्वधायै नमः – स्वधामावाहयामि – स्थापयामि – पूजयामि
11. ओम् स्वाहायै नमः – स्वाहामावाहयामि – स्थापयामि – पूजयामि
12. ओम् मातृभ्यो नमः – मातॄः आवाहयामि – स्थापयामि – पूजयामि
13. ओम् लोकमातृभ्यो नमः – लोकमातॄः आहयामि – स्थापयामि – पूजयामि
14. ओम् धृत्यै नमः – धृतिमावाहयामि – स्थापयामि – पूजयामि

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 15. | ओम् पुष्ट्यै नमः | – पुष्टिमावाहयामि | – स्थापयामि | – पूजयामि |
| 16. | ओम् तुष्ट्यै नमः | – तुष्टिमावाहयामि | – स्थापयामि | – पूजयामि |
| 17. | ओम् आत्मनः | – आत्मनः | – स्थापयामि | – पूजयामि |
| | कुलदेवतायै नमः | – कुलदेवतामावाहयामि | – स्थापयामि | – पूजयामि |

ओम् मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ॱ समिमन्द धातु।

**विष्वे देवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ।**
**ओम् गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।**
**देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।**
**धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।**
**गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश।।**

***।। गौर्याद्याः कुल देवतान्त मातरो गणपतिसहिताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।।***

**पूजन**–3 बार जल छोडें ॐ पादयोः पाद्यं, हस्तयोः अर्ध्यम् स्नानीयं जलं समर्पयामि।
**गन्ध, अक्षतपुष्प धूप दीपं**–गन्धार्चनं समर्पयामि, अक्षतान् समर्पयामि।
**माला फूल धूप दीप आदि समर्पित करें–**

फूल–पुष्पाणि समर्पयामि।
धूप–धूपं आध्रापयामि।
दीपं–दीपं दर्शयामि।

**हाथ धोकर**

| | | |
|---|---|---|
| मिष्ठान्न | – | नैवेद्यं निवेदयामि। |
| आचमन | – | नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। |
| फल | – | ऋतु फलं समपर्यामि। |
| सुपाड़ी पान | – | ताम्बूल पुंगी फलं समर्पयामि। |
| दक्षिणा | – | दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि। |
| प्रार्थना | – | प्रार्थना पूर्वकं नमस्कारोमि। |

***हाथ में जल लेकर बोलें अनया पूजया षोडश मातृका प्रीयन्ताम् न मम्।***



# महालक्ष्मी – पूजन

सर्वप्रथम लक्ष्मी जी की नूतन प्रतिमा तथा द्रव्यलक्ष्मी को किसी पात्र में रखकर, अक्षत, पुष्प समर्पित करके प्रतिष्ठित करें, फिर लक्ष्मी का ध्यान करें। हाथ में फूल लेकर ध्यान करें और कहें :

## ध्यान

***या सा पद्मासनस्था, विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी,***
***गम्भीरावर्तनाभि स्तनभरनमिता, शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।***
***या लक्ष्मी र्दिव्यरूपैः मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः,***
***सा नित्या पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्य युक्ता।।***

"जो देवी पद्मासन पर स्थित हैं, विपुल कटितटवाली हैं, जो कमलनयना हैं, गहरी गोलाकार नाभि वाली हैं, जो स्तनों के भार से नमित हैं, जो शुभवस्त्र का उत्तरीय धारण किये हुए हैं, जो लक्ष्मी दिव्यरूप धारिणी हैं, नाना प्रकार के मणियों से युक्त, स्वर्ण कलशों के द्वारा जिन्हें स्नान कराया जाता है, वे भगवती लक्ष्मी हाथ में कमल धारण किए, सब मंगल से युक्त, नित्य प्रति मेरे घर निवास करें।"

❖ हाथ का पुष्प देवी जी पर चढ़ावें। देवी को प्रणाम करे।

**आवाहन**–हाथ मे अक्षत, पुष्प लेकर देवी का आवाहन करें और कहें–

***"मैं सब लोकों की जननी, शूलधारिणी, तीन नेत्र वाली, सब देवों से युक्त, ईश्वरी, देवी का आवाहन करता हूँ।"***

❖ **अक्षत पुष्प चढ़ाकर कहें**–मैं देवी का आवाहन करता हूँ।

**आसन**–हाथ में पुष्प लेकर कहें–
***"तप्त स्वर्ण के समान आभावाली, मुक्तामणि पर विराजमान, स्वच्छ कमल के दिव्य आसन पर विराजमान हों।" देवी को आसन समर्पित करता हूँ।***

❖ **पुष्प देवी जी को अर्पित करें।**

**पाद्य**–हाथ में जल लेकर, देवी के चरणों में चढ़ावें और कहें–
***"हे माता! गंगा आदि तीर्थों के जल से युक्त, पुष्प गन्ध से संयुक्त जल से आप का पाद–प्रक्षालन करता हूँ। आप की जय हो" जल चढ़ावें।***

**अर्घ्य**–हाथ में हल्दी, लाल चन्दन अगर आदि से मिश्रित जल पात्र में लेकर कहें–
***"हे माता! सुगन्धित पदार्थों से युक्त जल को आप के अर्घ्य हेतु समर्पित करता हूँ। महालक्ष्मी को प्रणाम है। अर्घ्य चढ़ा दें।***

**आचमन**–चम्मच में थोड़ा जल लेकर देवी जी के मुख की ओर करें और कहें–
***"हे माता! आप सब लोकों की शक्ति स्वरूपा हैं, ब्रह्मादिक देवो द्वारा सेवित हैं। मैं आप को आचमन समर्पित करता हूँ।" जल चढ़ा दें।***

**स्नान**—पूजा पीठ पर स्थापित पात्र में द्रव्यलक्ष्मी (चाँदी या सोने के सिक्के में अंकित लक्ष्मी जी वाला सिक्का) महालक्ष्मी का ही प्रतीक है। उसे एक कटोरी में रखकर स्नान कराते हुए कहें—

***"हे माता! स्वर्ण कमल से सुवासित, मन्दाकिनी का जल तुम्हारे स्नान के लिए समर्पित कर रहा हूँ, इसमें स्नान करें।"***

स्नान के लिए जल समर्पित करता हूँ। स्नान के बाद आचमन के लिए जल समर्पित करता हूँ। (पुनः जल दें) और शुद्ध वस्त्र से पोंछ कर रखें।

**दुग्ध—स्नान**—गाय के कच्चा दूध से स्नान करायें, पुनः शुद्ध जल से स्नान करायें—और कहें :

***हे माता ! मैं दुग्ध स्नान समर्पित करता हूँ।***

***(शुद्ध जल से स्नान करावें और वस्त्र से पोंछ दें)***

**दधि—स्नान**—द्रव्य लक्ष्मी जी को दही से स्नान करावें, पुनः शुद्ध जल से स्नान कराकर, शुद्ध वस्त्र से पोंछ दें। अन्त में समर्पण वाक्य बोलें।

**घृत स्नान**—घृत से स्नान कराकर, शुद्ध जल से स्नान करावें और पोंछ दें। ***अन्त में पूर्ववत् समर्पण वाक्य बोलें।***

**मधु स्नान**—शहद से स्नान करावें, और शुद्ध जल से स्नान कराकर पोंछ दें। ***समर्पण वाक्य बोलें।***

**शर्करा स्नान**—शर्करा जल में घोलकर स्नान करावें, पुनः शुद्ध जल से स्नान करावें और पोंछ दें।

***समर्पण वाक्य बोलें।***

**पंचामृत स्नान**—पंचामृत से स्नान करावें, पुनः शुद्ध जल से स्नान करावें और पोंछ दें।

***समर्पण वाक्य बोलें।***

(यदि लक्ष्मी जी का महाभिषेक करना चाहें तो गाय के दुग्ध आदि से अखण्ड जल धारा से स्नान (अभिषेक) करायें। स्नान काल में 'श्रीसूक्त' के मन्त्रों के भाव का हिन्दी रूपान्तर बोलें। अभिषेक द्रव्य लक्ष्मी (धातु की मूर्ति) पर ही संभव मृत्तिका निर्मित मूर्ति पर अभिषेक संभव नहीं है।

**गन्धोदक स्नान**—गंध, चन्दन मिश्रित जल से स्नान करावें पुनः शुद्ध जल से स्नान करावें, अंग प्रोक्षण करें और समर्पण वाक्य बोलें।

**शुद्धोदक स्नान**—शुद्ध जल या गंगा जल से स्नान कराकर अंग प्रोक्षण करें और प्रतिमा को यथा स्थान आसन पर रखें।

***शुद्धोदक से स्नान कराता हूँ। लक्ष्मी माता को प्रणाम।***

**वस्त्र—**लक्ष्मी माता के लिए चुनरी, ओढ़नी आदि वस्त्र लेकर नूतन मूर्ति को समर्पित करते हुए, समर्पण वाक्य बोलें। द्रव्य लक्ष्मी पर कलावा चढ़ावें।



***"हे माता! अत्यन्त मनोहर, नूतन और दिव्य वस्त्र आप की सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ इसे ग्रहण करें। वस्त्र समर्पित कर रहा हूँ।" (वस्त्र अर्पण के बाद आचमन का जल दो बार छोड़ दें)***

**उपवस्त्र—**कञ्चुकी आदि उत्तरीय वस्त्र अर्पित करते हुए, समर्पण भाव प्रकट करें और समर्पण वाक्य बोलें।

***(समर्पण के बाद दो बार आचमन जल दें)***

**मधुपर्क**—दधि—मधु मिश्रित मधुपर्क कॉसे के पात्र में रखकर, दूसरे काँसे के पात्र से ढ़का हुआ मधुपर्क देवी को अर्पित करें और समर्पण भाव श्रद्धापूर्वक कहें—

***"हे देवि! मधूपर्क के लिए मधु, दही और घृत का मिश्रण आपकी सेवा में अर्पित है, इसे ग्रहण करें। मधुपर्क समर्पित करता हूँ।" (मधुपर्क चढ़ाने के बाद दो बार आचमन जल छोड़े)***

**आभूषण**—भगवती के लिए चूड़ियाँ, कुण्डल आदि आभूषण लेकर समर्पित करते हुए, देवी के चरणों में समर्पित करें और समर्पण भाव निवेदित करें।

***"हे देवि! स्वभाव से सुन्दर अंगों वाली, नाना देवताओं को आश्रय देने वाली हे शुभ! आभूषण समर्पित कर रहा हूँ, कृपया ग्रहण करें।"***

**सौभाग्य सूत्र**—सौभाग्य सूत्र देवी जी के गले में बाँधते हुए, भाव निवेदन करें और समर्पण वाक्य बोलें—

***"हे वरदे! सुवर्ण और मणि से सज्जित सौभाग्य सूत्र आप के कण्ठ में बाँध रहा हूँ। इसे स्वीकार करें और मुझे सौभाग्य प्रदान करें।"***

**गन्ध**—हरिद्राचूर्ण, चन्दन लेप लेकर देवी के टीका लगावें और भाव निवेदन करें और समर्पण वाक्य बोलें—

***"हे माता! मैं भक्ति पूर्वक आप के विलेपन के लिए, केसर, कपूर, चन्दन से युक्त लेप प्रस्तुत करता हूँ, इसे ग्रहण करें।***

चन्दन लेप, हरिद्राचूर्ण समर्पित करता हूँ।

**रक्त चन्दन**—रक्त चन्दन का लेप अनामिका उँगली से लगावें। और समर्पण वाक्य बोलें।

***"हे देवी! पारिजात से उत्पन्न, रक्त चन्दन से मिश्रित लेप समर्पित है, इसे ग्रहण करें।" (माथे पर टीका लगावें)***

**सिन्दूर—**देवी जी को सिन्दूर का टीका लगावें। निवेदन करके समर्पण वाक्य बोलें—

***"हे देवि! आप को सिन्दूर तिलक अति प्रिय है। अतः यह रक्तवर्ण सिन्दूर आप की सेवा में अर्पित है, इसे स्वीकार करें।***

*सिन्दूर समर्पित है।*

**कुंकुम**—कुंकुम लेकर देवी के माथे पर कुंकुम की बिन्दी लगावें, भाव निवेदन के बाद समर्पण वाक्य बोलें।

***"हे माता—यह दिव्य, कामरूप, कामनाओं की पूर्ति करने वाला, अखण्ड कामना एवं सौभाग्य देने वाला कुंकुम समर्पित करता हूँ, इसे स्वीकार करें।"***

"कुंकुम समर्पित है"—महालक्ष्मी को प्रणाम।

**सुगन्धित द्रव्य (इत्र, तैल आदि)**—सुगन्धित द्रव्य (इत्र, तैलादि) लेकर माता को अर्पित करें और भावनिवेदन करते हुए, समर्पण वाक्य बोलें।

***"हे परमेश्वरी! मैं आप की सेवा विलेपन के लिए, विविध सुगन्धि युक्त तैल, इत्र समर्पित करता हूँ, ग्रहण करें।"***

सुगन्धित द्रव्य समर्पित करता हूँ। आपको प्रणाम।

**अक्षत**—हाथ में अक्षत लेकर चढ़ावें, भाव निवेदन के बाद समर्पण वाक्य बोलें—

***"हे सुरश्रेष्ठे! परमेष्वरि! मैं कुंकुम युक्त, शोभित अक्षत भक्तिपूर्वक आप को अर्पित कर रहा हूँ, इन्हें स्वीकार करें।"***

अक्षत समर्पित करता हूँ।

**पुष्प एवं पुष्पमाला**—पुष्प एवं पुष्पमाला लेकर देवी जी को अलंकृत करें, लाल कमल सम्भव हो तो उत्तम है। भावनिवेदन करते हुए समर्पण वाक्य निवेदित करें।

***"हे देवि! विविध प्रकार के, सुगन्धित पुष्प एवं पुष्पमाला आप की सेवा में समर्पित है, इन्हें ग्रहण करें।" पुष्प एवं पुष्पमाला समर्पित करता हूँ।***

## अंग पूजा

देवी के एक—एक नाम—मंत्र से अंग पूजा, रोली—कुंकुम—मिश्रित अक्षत— पुष्पों के द्वारा करें।

ॐ चपलायै नमः, पादौ पूजयामि (दोनों पैरों पर अक्षत—पुष्प चढ़ावें)
ॐ चंचलायै नमः, जानुनी पूजयामि (दोनों घुटनों में)
ॐ कमलायै नमः, कटिं पूजयामि (कमर में)
ॐ कात्यायन्यै नमः, नाभिं पूजयामि (नाभि में)
ॐ जगन्मात्रे नमः, जठरं पूजयामि (पेट में)
ॐ विश्व वल्लभायै नमः, वक्षः स्थलं पूजयामि (वक्षः स्थल में)
ॐ कमलवासिन्यै नमः, हस्तौ पूजयामि (दोनों हाथ में)
ॐ पद्माननायै नमः, मुखं पूजयामि (मुख में)
ॐ कमल पत्राक्ष्यै नमः, नेत्रत्रयं पूजयामि (तीनों नेत्रों में)
ॐ श्रिये नमः, शिरः पूजयामि (सिर में)
ॐ महालक्ष्म्यै नमः, सर्वांगं पूजयामि (सम्पूर्ण शरीर में)



## अष्टसिद्धि—पूजा

निम्नलिखित मन्त्रों के अनुसार आठ दिशाओं के क्रम से आठ सिद्धियों की पूजा कुंकुमाक्त अक्षतों से महालक्ष्मी के पास करें।

ॐ अणिम्ने नमः (पूर्व दिशा में)
ॐ महिम्ने नमः (अग्नि कोण में)
ॐ गरिम्ने नमः (दक्षिण में)
ॐ लघिम्ने नमः (नैऋत्य में)
ॐ प्राप्त्यै नमः (पश्चिम में)
ॐ प्राकाम्य नमः (वायव्य में)
ॐ ईशितायै नमः (उत्तर में)
ॐ वशितायै नमः (ईशान कोण में)

## अष्टलक्ष्मी—पूजन

महालक्ष्मी के पास पूर्वादि दिशाओं के क्रम से आठों दिशाओं में कुंकुमानाक्त अक्षत तथा पुष्पों से एक—एक नाम मन्त्र पढ़कर आठ लक्ष्मियों का पूजन करें।

ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः (पूर्व दिशा में)
ॐ विद्या लक्ष्म्यै नमः (अग्नि कोण में)
ॐ सौभाग्य लक्ष्म्यै नमः (दक्षिण में)
ॐ अमृत लक्ष्म्यै नमः (नैर्कृत्य में)
ॐ काम लक्ष्म्यै नमः (पश्चिम में)
ॐ सत्य लक्ष्म्यै नमः (वायव्य में)
ॐ भोग लक्ष्म्यै नमः (उत्तर में)
ॐ योग लक्ष्म्यै नमः (ईशान कोण में)

**धूप**—धूपबत्ती जलाकर लक्ष्मी जी की ओर धुपावें तथा भावनिवेदन करते हुए, समर्पण वाक्य कहें—

***"वनस्पति के रसों से उत्पन्न, सुन्दर सुगन्धि से युक्त देवताओं को प्रिय धूप स्वीकार करें।"***

धूप समर्पित करता हूँ।

**दीप**—दीप जलाकर देवी जी की ओर दिखाते हुए, भावनिवेदन करें और समर्पण वाक्य बोलें—

***"हे परमेश्वरी! कपास की बत्ती से युक्त, घृतपूर्ण, अत्यन्त मनोहर, अन्धकार—नाशक दीपक दिखा रहा हूँ। इसे स्वीकार करें।***

दीपक समर्पित करता हूँ।

(दीपक जलाकर जल घुमावें, दिखाने के बाद पुनः जल घुमावें और हाथ धो लें। दीपक के चारों ओर बाएँ से दाएँ को जल घुमावें)

**नैवेद्य**–नैवेद्य के लिए मेवा, मिठाई, मिश्री, पकवान, हलवा, पूड़ी आदि यथा संभव पदार्थ पात्र में रखकर देवी के समक्ष जल घुमावें। भाव निवेदन करके समर्पण वाक्य बोलें।

**भाव निवेदन**–"हे देवि! मैं आप की सेवा में उत्तम स्वादु छः रसों से युक्त, दिव्य नैवेद्य अर्पित करता हूँ। इसे ग्रहण कीजिये।"

नैवेद्य समर्पित करता हूँ। लक्ष्मी देवी को प्रणाम।

**आचमन**–(नैवेद्य के मध्य में एक बार जल छोड़े। अन्त में तीन बार जल छोड़े) आचमन के साथ ही बोलें–

***ॐ प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, ब्रह्मणे नमः।***

**करोद्वर्तन**–'श्री महालक्ष्मी जी को प्रणाम' कहकर, प्रतिमा के ऊपर चन्दन समर्पित करें और कहें–

***"करोद्वर्तन के लिए चन्दन समर्पित करता हूँ।" पुनः दोनों हाथ धो लें।***

**ऋतु फल**–देवी जी के सामने ऋतुफल रखकर, आचमन का जल छोड़े और समर्पण वाक्य बोलें–

महालक्ष्मी देवी के लिए ऋतु फल समर्पित करता हूँ।

**आचमन**–आचमन का जल–छोड़े।

**ताम्बूल पूगीफलादि**–देवी के समक्ष ताम्बूल, सुपारी, लौंग, छोटी इलायची समर्पित करें, समर्पण वाक्य बोलें–

मुखशुद्धि हेतु पान–सुपारी, लौंग, इलायची समर्पित करता हूँ।

**द्रव्य दक्षिणा**–श्रद्धा के अनुसार द्रव्य दक्षिणा लेकर देवी जी पर चढ़ावें भाव निवेदन करते हुए, समर्पण वाक्य बोलें–

***हे माता! आप अनन्त पुण्य फल देने वाली हैं। मैं आप से शान्ति हेतु प्रार्थना करता हूँ, मुझे शान्ति प्रदान करें, और मेरी दक्षिणा स्वीकार करें।***

द्रव्य दक्षिणा अर्पित करता हूँ। महालक्ष्मी को प्रणाम।

**नीराजन**–हाथ में प्रज्वलित दीप में कपूर रखकर नीराजन करें और भावनिवेदन करते हुए समर्पण वाक्य बोलें–

***हे माता! समस्त लोकों को दृष्टि देने वाला और भीतर बाहर के तमस् को भगाने वाला कर्पूर निर्मित नीराजन समर्पित कर रहा हूँ, स्वीकार करें।***

(जल छोड़े, आरती उतारें, जल घुमाएँ और हाथ धो लें)



**प्रार्थना**–पुष्प–अक्षत लेकर हाथ जोड़ें और महालक्ष्मी जी की प्रार्थना भक्तिभाव से करें।

**भाव निवेदन**–"हे मइया! मुक्ता से जड़ित मुकुट वाले, सुर, असुर, इन्द्र आदि सदा ही आप के चरण–कमलों की वन्दना करते हैं। वे झुककर के मंगल कामना करते हैं। आप समस्त कामनाओं को सिद्ध करने वाली हैं। मइया! मैं आप को प्रणाम करता हूँ। हे माँ महालक्ष्मी भवानी! आप सब कामनाओं पूर्ण करने वाली हैं, आप सकल लोक द्वारा पूजित हैं। आप मुझ पर प्रसन्न हो, मैं आप को प्रणाम करता हूँ। हे माता लक्ष्मी! देवताओं को भी वर देने वाली हैं। आप की कृपा का वरदान प्राप्त कर लेने वालों की जैसी सुखमय अवस्था होती है, वैसी ही अवस्था, तेरा पूजन करने से मेरी भी हो जाय। मुझे सब प्रकार की सुख–समृद्धि प्राप्त हो, यही प्रणत प्रार्थना है। मेरी मइया महालक्ष्मी! आप को बारम्बार प्रणाम है।"

**अंजलि समर्पण**–मइया की सेवा में खील, बताशे, चीनी से निर्मित हाथी, घोड़े, खिलौने, लाई आदि की अंजलि भरकर, भक्तिभाव से अर्पित करें और आचमन के लिए जल डालकर, मइया से दोनों हाथ पसार कर भिक्षा माँगें। लक्ष्मी मइया की जय बोलें।

## पिछली जोड़ी का पूजन–विसर्जन

श्री गणेश – लक्ष्मी की गतवर्ष पूजित जोड़ी, जो पीठ पर रखी हैं, उनका विधिवत, उपचारों से पूजन करके, उनकी प्रार्थना कर के, अक्षत–पुष्प लेकर विसर्जन करें और किसी नदी, जलाशय, नहर आदि में प्रवाहित कर दें। किसी देवस्थान आदि में न रखें।

## देहली विनायक पूजन

दीपावली के शुभ अवसर पर या व्यावसायिक प्रतिष्ठान, दूकान के शुभारम्भ में, दूकान प्रतिष्ठान के प्रमुख भाग, गद्दी, कार्यालय जैसे स्थान में दीवाल पर 'श्री गणेशाय नमः' या 'ॐ गं गणपतये नमः' तथा स्वस्तिक चिह्न और 'शुभ–लाभ' शुद्ध घृत में सिन्दूर मिलाकर, अनार की कलम में रूई के सहयोग से अथवा दाहिने हाथ की अनामिका उँगली से लिखना चाहिए। इन्हीं दीवाल पर अंकित शब्दों पर "ॐ देहलीविनायकाय नमः" इस शुभ नाम मन्त्र द्वारा गन्ध–पुष्पादि पंचोपचार से पूजन करें।

## श्री महाकाली (दावात) पूजन

शीशे के मसिपात्र (दावात) में काली स्याही घोलकर महालक्ष्मी पीठ के पास अक्षत पुंज में रख दें, सिन्दूर से उस पर स्वास्तिक चिह्न बनावें और कण्ठ में रक्षासूत्र (कलावा) लपेट दें। मसिपात्र को श्रीमहाकाली का प्रतीक मानकर, उसी में काली जी

का आवाहन–पूजन करें। पूजन में ''ॐ श्री महाकाल्यै नमः'' इस नाम मन्त्र से 1. पंचोपचार या सुविधानुसार 2. शोडश–उपचार से पूजन करें। पूजन के अन्त में प्रार्थना–पूर्वक महाकाली जी को प्रणाम करें। भाव निवेदन इस प्रकार करें–

लेखनी से युक्त हे मसि! तुम चित्रगुप्त के सम्पूर्ण बहीं–खातों में विद्यमान हों और उसके आशय को जानने वाली हो। तुम मेरे पन्नों के लेख को सुन्दर अक्षर से युक्त बनाओ। जो वेदान्त में माया और सांख्य शास्त्र में प्रकृत रूपिणी है, वही चण्ड मुण्ड दैत्यों का विनाश करने वाली है। वही समस्त देवों से पूजित है। वह महाशक्ति हम को वर प्रदान करे। श्री महाकाली को बारम्बार प्रणाम। महाकाली मइया की जय।

## महासरस्वती (लेखनी) पूजन

पूजापीठ पर अक्षत पुंज पर लेखनी को रखें, उस में रक्षा सूत्र बाँध दें। हाथ जोड़कर भाव निवेदन करते हुए कहें–

''हे लेखनी ! तुम सरस्वती का प्रतिरूप हो। तुम्हारी रचना ब्रह्मा जी ने लोक कल्याण के लिए किया है, अतः मैं तुम्हारी पूजा कर रहा हूँ।'' इसके बाद ''ॐ लेखनीस्थायै देव्यै नमः'' इस नाम–मंत्र द्वारा गन्ध, अक्षत, पुष्प रोली आदि उपचारों से लेखनी की पूजा करें। अन्त में चावल–फूल लेकर हाथ जोड़े और प्रार्थना करते हुए इस प्रकार निवेदन करें–

हे लेखनी ! तुम्हारे माध्यम से ही, शास्त्र लौकिक व्यवहार और समस्त विधाओं का ज्ञान प्राप्त होता है, इसीलिए मैं सदैव आपकी पूजा करता रहूँगा। हे देवि! तुम मेरे हाथों में स्थिर रहकर, मेरा कल्याण करती रहो, यही मेरी प्रार्थना है। मॉ वाणी रूपिणी लेखनी को प्रणाम है।

**पंजिका (बही–खाता) पूजन**–बही–पंजिका–बसना थैली में रोली से स्वास्तिक चिह्न बनाकर थैली में पाँच हल्दी गॉठ, धनियाँ, कमलगहा, अक्षत, दूब द्रव्य रखकर के पूजन करें।

**सरस्वती ध्यान**–माता सरस्वती की प्रार्थना के लिए अक्षत पुष्प लेकर हाथ जोड़े, और भक्तिभाव से भाव समर्पण–करते हुए, ध्यान करें।

मैं श्वेत वेषधारिणी, ब्रह्म विचार का सार, परम आदि शक्ति, जड़ता रूपी अन्धकार को भगाने वाली, हाथ में स्फटिक माला धारण किये हुए, पद्मासन पर विराजमान, परमेश्वरी, भगवती बुद्धि देने वाली, मइया शारदा की वन्दना करता हूँ।

1. पंच उपचार–(पूजा) 1. गन्ध 2. पुष्प 3. धूप 4. दीप 5. नैवेद्य।
2. षोड़श उपचार–(पूजा) 1. पाद्य 2. अर्घ्य 3. आचमन 4. स्नान 5. वस्त्र 6. आभूषण 7. गन्ध 8. पुष्प 9. धूप 10. दीप 11. नैवेद्य 12. आचमन 13. ताम्बूल 14. स्तवन, 15. तर्पण 16. नमस्कार।



ध्यान के अनन्तर बही–खाते के स्वास्तिक पर अक्षत, हरी मूँग के दाने और फल रखकर ''ॐ वीणा पुस्तक धारिण्यै श्रीसरस्वत्यै नमः'' इस नाम मन्त्र से गन्धादि उपचारों से पूजन करें। महासरस्वती को प्रणाम।

### मइया सरस्वती की प्रार्थना

जो देवी कुन्दकली, चन्द्रमा और तुषार के समान धवल हार धारण करने वाली है, जो शुभ्र वस्त्रों से युक्त है, जिनके हाथों में वीणा सुशोभित है, जो श्वेत कमल पर विराजमान हैं, जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देवों के द्वारा सदा पूजी जाती हैं, वे सरस्वती देवी मेरी रक्षा करें। वे सरस्वती मेरी जड़ता दूर करें। हे देवि! मैं आपका आवाहन करता हूँ, मुझ पर कृपा करें। आप मेरे कोश की वृद्धि करें।

**कुबेर पूजन**–मंजूषा (सन्दूक) तिजोरी आदि को रोली के द्वारा स्वास्तिक चिह्न से अलंकृत कर के उसी में कुबेर का आवाहन करें–

''हे कुबेर देव ! मैं तुम्हारा आवाहन करता हूँ। आप कृपा करके यहाँ पधारें और मेरे कोश की वृद्धि करके उसकी रक्षा करते रहें।

आवाहन के पष्चात् ''ॐ कुबेराय नमः'' इस नाम मन्त्र से गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि उपचारों से पूजन करें। उसके बाद श्री कुबेर देव की प्रार्थना करें। हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर कहें–

हे धनाध्यक्ष! नरयान पर सवारी करने वाले, हे राज–राजेश्वर, महात्मन् कुबेर! आप को नमस्कार है। मुझे धन धान्यादि सम्पत्ति प्रदान करें।

प्रार्थना के बाद पैसे रखने वाली तिजोरी, सन्दूक आदि में पहले पूजा की गई हल्दी, धनियॉ, कमलगट्टा, द्रव्य दूर्वा आदि से युक्त थैली रख दें।

## तुला–मान–पूजन

सिन्दूर या रोली से तराजू आदि पर स्वास्तिक अंकित करके, रक्षासूत्र बाँधकर तुलादि के अधिष्ठाता का ध्यान करें और हाथ जोड़कर निवेदन वाक्य कहें –

हे देवी ! सब देवों की शक्ति का आधार तुम्ही हो। आप जगत को धारण करती हो और जगत के समस्त जीवों की साक्षी भूत हो, आप को नमस्कार है। ध्यान के उपरान्त ''ॐ तुलाधिष्ठातृ देवतायै नमः'' इस नाम–मन्त्र से पंचोपचार पूजन करें। अन्त में प्रणाम करें।

## दीप मालिका–पूजन

किसी पात्र में, धुलकर स्वच्छ किये हुए, ग्यारह, इक्कीस, इक्यावन अथवा उस से अधिक मिट्टी के दीपकों में तैल, बत्ती रखकर उन्हें जला दें। लक्ष्मी देवी के सामने रखकर ''ॐ दीपावल्यै नमः'' इस नाम–मन्त्र से[1] पंचोपचारं से पूजन करें। लोकाचार के

1. पंच उपचार : गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य।

अनुसार दीपों के सामने, ईख, धान का लावा (खील) सन्तरा, पानी फल (सिंघाड़ा) आदि भी अर्पित करें। ये सामग्री गणेश–लक्ष्मी प्रतिमाओं में भी चढ़ावे। अन्त में दीपमालिका की प्रार्थना इस प्रकार करें–(हाथ मे चावल फूल ले लें)

हे दीप आप ब्रह्म स्वरूप हैं। आप अन्धकार दूर करने वाले हैं। आप मेरे द्वारा की गई पूजा को ग्रहण करें तथा तेज की वृद्धि करें। आप को प्रणाम करता हूँ।

थाली के दीपों पर चावल छिड़कें और घर के विभिन्न भागों, दूकान, कार्यालय आदि में जलते हुए दीपक रख दें।

M M M M M

# पुरुष सूक्तम्

## मन्त्र

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमि ꣳ सर्वमस्पृत्वात्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम् ।।1।।

पुरुष एवेद ꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।2।।

एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।3।।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ व्यक्रामत् साशनानशने अभि।।4।।

ततो विराजाऽयत् विराजो अधिपुरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः।।5।।

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्तांश्चक्रे वायव्यानाराण्या ग्राम्याश्च ये।।6।।

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दासि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत् ।।7।।

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादयतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।।8।।

तं यज्ञं वर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्याः ऋषयश्च ये।।9।।

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरु पादाउच्येते।।10।।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरु तदस्य यदवैश्यः पदभ्यां शूद्रो अजायत।।11।।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोभाद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।12।।

नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ्ॅं शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत।
पदभ्यां भूमिर्दिशः श्रोमात्तथा लोकां अकल्पयन्।।13।।

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।14।।

सप्तास्यासन् परिधस्मिः सप्त समिधः कृताः।
देवा याद्यज्ञं तन्वाना अबघनन् पुरुषं पशुम् ।।15।।

यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेह नाकं महिमानः सचयन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।16।।

## भाषानुवाद

परम विराट पुरुष की महिमा जगतीतल में न्यारी।
शत शत नयन करों से मण्डित सहस सहस पगधारी।
सकल भूमि पर व्याप्त चतुर्दिक आभा-मण्डित तन है।
दिव्य निखिल ब्रह्माण्ड दशाङ्कुल ऊपर शुभ आसन है।।1।।

वह है परम पुरुष अविनाशी काल-कला का स्वामी।
कण-कण में अणु-अणु में द्योतित है प्रभु अन्तर्यामी।
सकल लोक में व्याप्त पुरुष वह भूत वही है भावी।
अन्न सुपोषित जीव-मिचय का ईश्वर पूर्ण प्रभावी।।2।।

इस विराट ब्रह्माण्ड-फलक का जो महिमा-तनुधारी।
निज वैभव से पंचभूत जग, पाद विभूति विहारी।।
त्रिपदमूर्ति से दिव्य लोक को विधिवत स्वयं सँवारे।
परम पुरुष निज दिव्य तेज से जगतीतल को धारे।।3।।

प्राणवान अप्राण भले हो जड़ हो या हो चेतन।
सब में प्रकट विभूति उसी की चेतन और अचेतन।



द्योतित दिव्य विभूति उसी की प्रकटी जगती सारी।
अग-जग में वह ज्योति सनातन आभा कण-कण न्यारी।।4।।

परम तत्व से उस विराट की सत्ता पहले आई।
वह ही है अधिपुरुष सनातन जिसकी आभा छाई।
भू का आविर्भाव हुआ फिर देहादिक उपजाये।
नगर-ग्राम, पुर जन-जन संकुल प्रभु ने स्वयं बनाये।।5।।

यजन-पुष्प-धृत आदि अनूठे सकल पदार्थ बनाये।
नभचारी-भू ग्राम निवासी, खग-मृग जीवन पाये।
सृजन-यज्ञ वह चवा अनवरत परमेश्वर की माया।
जड़ चेतन ने जीवन पाया, जीवन रहा पराया।।6।।

परम पुनीत पुरुष में ज्यों-ज्यों सृजन समीहा जागी।
त्यों त्यों तन्द्रा और निष्क्रियता धीरे-धीरे भागी।
वेद पुरुष से सामवेद की निकली मधुर ऋचायें।
यजुष और फक छन्दस वाली फूट पड़ी धारायें।।7।।

उभय दन्त से जीव अश्व गर्दम से जीवनधारी।
यज्ञ पुरुष की सृजन शक्ति के जो ज्वलन्त अधिकारी।
यजन क्रिया के सम्पादन में जिनकी योग-महत्ता।
पयधारा युत धेनु प्रट फिर अजा-मेष की सत्त।।8।।

उस यज्ञ साधन भूत प्रभु की कर यथावत अर्चना।
करते हुए अभिषेक सुर ऋषि कर रहे अभ्यर्थना।।9।।

मुख और उनके बाहु क्या थे, वतर्क सब करने लगे।
पग और उनके उरु युगों की कल्पना करने लगे।।10।।

मुख ब्राह्मण राजन्य बाहुयुग, जघन वैश्य कहलाये।
पग से प्रकटे शुद्र पुरुष के जग को विशद बनाये।।11।।

मन से प्रकटा चन्द्र चक्षु से दिनका आभाशाली।
वायु श्रोत्र से प्राणरूप मुख से थी बहि निराली।।12।।

यज्ञ पुरुष के नाभिभाग से अन्तरिक्ष सरसाया।
शिर से स्वर्ग लोक पगतल से मां धरती की काया।

श्रोत्र युगल से उपजी त्यों नवकल्पित दशों दिशाएँ।
उस विराट के अंग-अंग में चौदह भुवन दिखाए।।13।।

यजन भावना से देवों की सुखकर यज्ञ विधान।
धृत वसन्त था हविष शरद थी मख का दिव्य वितान।।14

जब देवों ने किया यज्ञ में यज्ञात्मक पशुबन्धन।
सात परिधि से लसित यज्ञ का पूर्ण हुआ सम्पादन।
सात छन्द युत सात परिधियाँ शुभ सोपान अनूपम।
समिधाएँ इक्कीस यजन की वर्षा दिव्य सुधोपम।।15।।

करें देवगण यज्ञ पुरुष का यजन पुण्य सुखकारी।
पूत धर्म वैसे ही सुरगण जिसके सदा पुजारी।
स्वर्ग लोक की अचल प्रतिष्ठा देव जहाँ जाते हैं।
वैसे ही उनके समुपासक स्थान वहा पाते हैं।

M M M M M



# श्री सूक्तम्

महालक्ष्मी को प्रणाम करते हुए कहें कि हे मइया ! मैं सपरिवार धन–वैभव सम्पन्न रहने के लिए, आप की कृपाप्राप्ति के लिए, आप पर आधारित 'श्री सूक्त' का पाठ करता हूँ। आप मेरे इस भाव–समर्पण से प्रसन्न हों।

**हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम् ।**
**चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।। 1।।**

**तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।**
**यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ।। 2।।**

**अश्वपूर्णां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।**
**श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ।। 3।।**

**कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।**
**पद्मे स्थिताम् पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।। 4।।**

**चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।**
**तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ।। 5।।**

**आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।**
**तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ।।6।।**

**उपैतु मां देवसरवः कीर्तिश्च मणिना सह ।**
**प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।। 7।।**

**क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।**
**अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।। 8।।**

**गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।**
**ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।। 9।।**

**मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।**
**पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।। 10।।**

**कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।**
**श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्म मालिनीम् ।। 11।।**

**आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।**
**नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।। 12।।**

**आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्म मालिनीम् ।**
**चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदों म आवह ।। 13।।**

**आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।**
**सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।। 14।**

**तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।**
**यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानह्म् ।। 15।।**

**यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।**
**सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं यजेत्।। 16।।**

## श्री सूक्त का भावानुवाद

अग्निदेव ! मम ओर निहारो । मेरी सब भव – बाधा टारो।
तप्त स्वर्ण सी कान्ति निराली । शुभ्रहार शुचि शोभाशाली।।
हरिणी सम गति तेजसुरूपा । हेममयी छवि दिव्यअनूपा।
सोइ कमला कर करु आवाहन । अन्तस आइ कर इँ अवगाहन।।

सदा रहइ कमला मम पासा । सदन छाँड़ि नहिं करहिं सुवासा।
हेम–रतन धन–गोधन खानी । मो कहँ देहु दीन जन जानी।।
बढ़इ वंश सुत होहिं सुखारी । गृह लक्ष्मी करु घर की नारी।
वेद जात अनुकम्पा कीजै। जन परिजन सब सुखी करीजै।

मात ! शीतकर सों सुख खानी । तेजमयी श्रुति माहिं बखानी।
परम उदार मनोरथ दायिनि । कमल मध्य सुखवासविधायिनि।।
कमले ! शरन गहौं मैं तोरी । दूर करहु माँ दुर्गति मोरी।
दया करहु हे लक्ष्मी माई । तव अवलम्ब न आन उपाई।।

दिव्य वाजियुत सुन्दर स्यन्दन। मध्य भाग शोभित तव आसन।
गज–गर्जन सुनि मुदित भवानी। जगत प्रकाश करहु जग रानी।।
मोरि विनय सुनि आवहु माता। सदन सनाथ करहु निधिजाता।
श्रीदेवी मोहि दास बनावहु। करहु कृपा अब वेर न लावहु।।

पदुम–वरनि पदमासिनिं माई । मात बुलावहुँ करहु सहाई।
सुस्मित मुख मनि मानिक जोती। तेज प्रभा जिमि दमकहिंमोती।।





निज जन हेतु परम उपकारिणि। पूरू काम सुरलोक विहारिणि।
मात! कान्ति कमनीय तुम्हारी । रवि सम दमकत शोभाकारी।।

तपस प्रभाव बिल्व उपजाये। फूल बिना फल लगहिं सुहाये।
सोइ फल अर्पित सेवा माहीं। रोग– दोष नाशहु अघ जाहीं।।
दुख निर्धनता पास न आवै। मम अन्तस तम दूर भगावै।
तुम्हरी शरन जियउँ मैं माई। तुम विन मोर न कोउ सहाई।।

करैं यक्षपति मोर सहाई । सुर मणिभद्र मिलहिं मोहिं आई।
उत्तम यश धन – वैभव पावौं । राष्ट्रभूमि कर मान बढ़ावौं।।
जहँ जनमेउँ सो धरती पावन । गौरव मोर बढइ मनभावन।
मलिन वेश अरु क्षुधा पिपासा । करउँ दरिद्रा केर विनाशा।।

तुम्हरी बहिन दरिद्रा माई । सदन छाँड़ि मम जाइ पराई।
लक्ष्मी विनय मोरि सुन लीजै । कृपा दृष्टि मम ओर करीजै।।
सब अभाव मम दैन्य मिटावहु । सदन मोर निज वास बनावहु।
पाइ सुगन्धि मुदित महरानी । शक्ति असीम न जाइ बखानी।।

जन की करहु कामना पूरी । शरनागत सों रहउ न दूरी।
पशु–धन बढ़इ मोर सुख खानी । आवहु मात सकल जगजानी।।
सफल कामना करहु हमारी । सिद्धि देहु जग की महतारी।
सत्य सिक्त बानी–वर दीजे । दान–पुन्य सुख शान्ति करीजै।।

सुकृत–परम भाजन करु मोहीं । ताते मात ! मनावहुँ तोहीं।
कर्दम कै सन्तति नर नारी । सकल पितर जगतीतल झारी।।
तिन कर विनय करहुँ मैं माता । मोरे घर आवहिं सुखदाता।
कमले ! निज सँग में लै आवो । मोरे सदन निवास करावो।।

हे जल देव ! विराजहु आई । जलद सुवृष्टि धरा सरसाई।
बरसहु सुखद अन्न उपजावहु । मोरे घर उर मोद मनावहु।।
कमला–सुत चिक्लीत पधारो । कमलासनि ! माँ मोहि उबारो।
हे चिक्लीत! करहु प्रभु दाया। सदन विराजहिं कमला माया ।।

पदमासनि ! शुभ भूषन धारे । रतन जटित सब भाँति सवाँरे।
पीत वरन चमकै इमि काया। सेवा करहिं सकल सुरराया।।
जग पोषहु चर अचर सँवारें । दिग्गज सेव कनक घट धारे।
लसित कमलमाला उर माहीं । सदय मात कर की करु छाँहीं।।

जात वेद ! तुम करहु सहाई । आनहु घर महँ कमला माई।
करुणामयि ! हे कमले माता । नाम तुम्हार जगत विख्याता।।
तेजशक्ति जीवन कर दात्री । दण्ड दया सुख शान्ति विधात्री।
नानाविध आभूषण धारिणि । हेम माल युत स्वर्ग विहारिणि।।

तेज दिवाकर दमकै काया । तुम सों मात जगत भरमाया।
दया करहु अब कमला माई । मोरे सदन विराजहु आई।।
मोहिं परिहरि अब कतहुँ न जाहू । तुम्हरे विन नहिं मोर निवाहु।।
बार बार प्रनवउँ महतारी । तव चरनन कर दास भिखारी।।

**दो0– अग्निदेव पूरन करहिं, पुरवहिं कमलाआस।**
**सदन माहिं कमलासना, आइ करहिंनिजवास।।**
**निज पवित्र तन मन किये, हवन करै नितजोय।**
**दिन दिन बाढ़इ सम्पदा, रंकहुँ नरपतिहोय।।**

M M M M M

# श्री लक्ष्मी सूक्तम्

भारतीय संस्कृति में मानव जीवन को सुखपूर्ण बनाने के लिए अनेक सुगम पथों की व्यवस्था है, जिन पर चलकर मानव मात्र अपने गन्तव्य को पा सकता है। भक्ति, ज्ञान, उपासना, पूजा जैसे अनेक साधन पथ मनीषियों के द्वारा निर्मित हैं, जो चतुर्विध पुरुषार्थ के साधक हैं। ऐहिक और पारलौकिक दोनों दृष्टि से मानव जीवन प्रमुख लक्ष्य सुख की प्राप्ति ही है। भौतिक सुखों की प्राप्ति जिन साधनों से संभव होती है। उनमें धन प्रमुख है। धन की प्राप्ति सद्बुद्धि से और सद्बुद्धि की प्राप्ति भगवत्कृपा से होती है। भगवत्कृपा इष्ट देवी-देवताओं की पूजा-उपासना से संभव होती है। वेदों से लेकर स्मृति और पुराणों ग्रन्थों तक पूजा के अनेक विधान बताये गये हैं। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वेदों में विविध दैवी शक्तियों की प्रार्थनाएँ उल्लिखित हैं, जिन्हें सूक्त कहा गया है। प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद में ऐसे अनेक सूक्त प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद के परिशिष्ट में लक्ष्मी जी से सम्बन्धित सूक्त है, जिसे लक्ष्मी सूक्त कहते हैं। इसके नियमित पाठ से लक्ष्मी जी प्रसन्न होकर धन-वैभव प्रदान करती हैं और जीवन सुखमय होता है।

प्रस्तुत सूक्त की भाषा संस्कृत है, जिसके पाठ में भक्तों को कठिनाई होती है। इसके साथ ही अशुद्ध उच्चारण का भी भय रहता है। उस क्लिष्टता से मुक्ति पाने के लिए वैदिक मंत्रों के मूलभाव को हिन्दी कविता में निबद्ध करने का प्रयास किया गया है। उन भावों को भाषान्तर के द्वारा हृदयंगम करके, भगवती लक्ष्मी की कृपा का वरदान सुकर हो सकता है। उपासना में भाव की प्रधानता होती है भाषा की नहीं। अतः लक्ष्मी के उपासक भाषान्तर में निबद्ध सूक्त का पाठ करके वही फल प्राप्त करेंगे, ऐसा विश्वास है। भारतीय संस्कृति के समुपासक सुधी जनों के हितार्थ यह सूक्त समर्पित करते हुए, भगवती से प्रार्थना करता हूँ कि उनके मनोरथ पूर्ण करें। इस उपासनापरक अनूदित कृति के सम्बन्ध में कुछ भी न कहकर इसका निर्णय श्रद्धालू, विज्ञ पाठकों पर छोड़ देता हूँ। विद्वज्जनों से प्रार्थना है कि अपने सत्परामर्शों का वरद-हस्त रखकर मुझे अनुगृहीत करना न भूलें।

## श्री लक्ष्मी सूक्त सुधा
## ( ऋग्परिशिष्टे )

### श्लोक

पद्मानने पद्मिनि पदमनेत्रे, पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विश्वमनोऽनुकूले, त्वपादपदमं मयि सन्निधत्स्व।।1।।

पद्मानने पद्म ऊरु पद्माक्षी पद्मसंभवे।
तन्मेभजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ।।2।।

अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने।
धनं में जुषतां देवि! सर्वकामांश्च देहि मे।।3।।

पुत्रं पौत्रं धनं धान्यं, हस्त्यश्वादि गवेरथय् ।
प्रजानां भवसि माता, आयुष्मन्तं करोतु मे।।4।।

धनमग्निः धनं वायुः धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो वृहस्पतिः वरुणो धनमस्तु मे।।5।।

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृमहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मध्यं ददातु सोमिनः।।6।।

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृत-पुण्यानां, भक्तानां श्रीसूक्त-जापिनाम् ।।7।।

सरसिज निलये! सरोजहस्ते! धवलतरांशुक-गन्धमाल्य शोभे।
भगवति हरिवल्लभै मनोज्ञे! त्रिभुवनभूतिकरि! प्रसीद मह्यम्।।8।।

विष्णुपत्नीं क्षमां देवी माधवीं माधवप्रियाम्!
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युत वल्लभाम्।।9।।

महालक्ष्म्यै च विद्महे, विष्णुपत्न्यथै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।। 10।।

आनन्दः कर्दमः श्रीदः चिक्लीत इति विश्रुताः।
ऋषयश्च श्रियः पुत्राः मयि श्रीदेवता मताः।।11।।

ऋणरोगादिदारिद्रयं पापक्षुदपमृत्यवः।
भयशोकमनस्तापः नश्यन्तु मम सर्वदा।।12।।

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यम् आरोग्य माभिधाच्छोभमानं महीयते।
धान्यं धनं पशु-बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।13।।



## भाषानुवाद

कमल सदृश मुख कमले तोरा। कमलनयनि माँ तोर निहोरा।
विश्व पियारि जगत शुभमूला। उर धरि चरन होहु अनुकूला।।1।।
कमल मुखी कमलोरु माता। हे कमलाक्षि सदन जलजाता।
कमले देहु मोहिं सुखसाधन। मोरे ह्रदय बसहु धरि आसन।।2।।

गोधन वाजि विभव सुख-दायिनि। पुरवहु आस सुपास विधायिनी।।3।।
पुत्र पौत्र धन धान्य सवारी। जीवन 'केरि तुमहिं महतारी।

मोहिं दीर्घायु करहु अब माई। तुमहिं मोर हौ मात सहाई।।4।।
धन कृशानु धन पवन दिनेशा। वित्त आठ वसु देव सुरेशा।
वरुण देव सुरगुरु मोहिं माई। सब मिलि मो कहं होहिं सहाई।।5।।

इन्द्र वृष मारक सुरस्वामी। वैनतेय खगपति नभगामी।
सोमपान करि होहिं सुखारी। सो सुख देहिं मोहिं महतारी।।6।।

मद-मात्सर्य पास नहिं आवैं। जपे अशुभ मति दूर भगावैं।
कमला-सूक्त पाठ कर जोई। ताहि कबहूँ तस कुमति न होई।।7।।

कमलासन पर मात विराजो। सुरमित कमल माल उर साजो।
शुभ्र-वसनि हरिप्रिये सनातनि। द्रवहु मात भयलोक विकासिनि।।8।।

हरि-वनिते! हे लक्ष्मी माई। माधव-प्रणयिनि करहु सहाई।
तुमहिं मात कर जोरि मनावौं। मात कृपा सुख सम्पति पावौं।।9।।

जानउँ ध्यावउँ तोहिं जगरानी। विष्णुप्रिया हे कमलारानी।
जग सुखकारिणि जग महतारी। देहु प्रेरणा होउँ सुखारी।।10।।

कर्दम, श्रीद तुम्हारे नन्दन। श्री आनन्द तनय जगवन्दन।।
मुनि चिक्लीत करहिं सुखसाधन। मोरे उर महं करहिं शुभासन।।11।।

मात! रोग ऋण पाप निवारो। दैन्य अकाल मृत्यु भय टारो।।
शोक मोह दुख-द्वन्द्व नसावो। आओ हे माँ कमले आओ।12।।

सुख-साधन, ऐश्वर्य यश, तेज सुखद सन्तान ।
जीवहुँ माँ शत शत शरद् , पा आशीष महान् ।। 13।।

M M M M M

# श्री कनकधारा स्त्रोतम्
# ( श्रीमदाद्य-शङ्कराचार्य-प्रणीत )

## ( भाषानुवाद )

### श्लोक

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती,
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम् ।
अङ्गीकृताखिलविभूति रपाङ्गलीला,
माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गलदेवतायाः।।1।।

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः,
प्रेमत्वाप्रणिहितानि गतागतानि।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या,
सा में श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः।।2।।

विश्वामरेन्द्र - पद विभ्रम- दानदक्ष–
मानन्द हेतु रधिकं मुरविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्धम् ,
इन्दीवरोदर - सहोदरमिन्दिरायाः।।3।।

आमीलिताक्ष मधिगम्य मुदा मुकुन्द–
मानन्द-कन्दमनिमेष मनङ्गतन्त्रम् ।
आकेकर स्थित-कनीनिक-पक्ष्म नेत्रम् ,
भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः।।4।।

बाह्यन्तरे मधुजितः श्रितकोस्तुभे या,
हारावलीव हरि नीलमणे र्विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला,
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः।।5।।





कालाम्बुदालि-ललितोरसि कैटभारेः,
धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव।
मातुः समस्तजगतां महनीय मूर्तिः,
भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः।।6।।

प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावात्,
माङ्गल्यभाजि मधुमाथिन मन्मथेन।
मय्यापतेत् तदिह मन्थरमीक्षणार्धम्,
मन्दालसं च मकरालय-कन्यकायाः।।7।।

दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बुधाराम्,
अस्मिन् अकिञ्चन-विहङ्गशिशौ विषण्णे।
दुष्कर्मधर्म अपनीय चिराय दूरम्,
नारायण-प्रणयिनी-नयनाम्बुवाहः।।8।।

इष्टाविशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र–
दृष्टया त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदर-दीप्तिरिष्टाम्,
पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर-विष्टरायाः।।9।।

गीर्देवतेति गरुड़ध्वजभामिनीति,
शाकम्भरीति शशिशेखर-बल्लभेति।
सृष्टि-स्थिति-प्रलय-केलिषु संस्थितायै,
तस्यै नमस्मिभुवनैक-गुरोस्तरुण्यै।।10।।

श्रुत्यै नमोऽतु शुभकर्म-फलंप्रसूत्यै,
रत्यै नमोऽस्तु रमणीय-गुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपथ-निकेतनायै,
पुष्टयै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम-वल्लभायै।।11।।

नमोऽस्तु नालीक- निभाननायै,
नमोऽस्तु दुग्धोदधि- जन्मभूत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृत- सोदरायै,
नमोऽस्तु नारायण- वल्लभायै।।12।।

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रिय-नन्दनानि,
साम्राज्य दानविभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि,
मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यत् ।।13।।
यत् कटाक्ष-समुपासनाविधिः, सेवकस्य सकलार्थ-सम्पदः।
सन्तनोति वचनाङ्गमानसैः, तां मुरारि हृदयेश्वरीं भजे।।14।।
सरसिजनिलये! सरोहस्ते! धवलतमांशुक-गन्ध-माल्यशोभे!
भगवति हरिवल्लभे! मनोज्ञे! त्रिभुवन-भूतिकरि! प्रसीदमह्यम् ।।15।।

दिग्हस्तिभिः कनक कुम्भ-मुखावसृष्ट,
स्वर्वाहिनी-विमल चारु-जलप्लुताङ्गीम् ।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-
लोकाधिनाथ-गृहिणी-ममृताब्धि-पुत्रीम् ।।16।।

कमले! कमलाक्षवल्लभे! त्वं करुणापूर-तरङ्गितैरपाङ्गैः।
अवलोकय मामकिञ्चनानां, प्रथमं पाथमकृत्रिमं दयायाः।।17।।
स्तुवन्तिर ये स्तुतिभिरमूभि रन्वहम्

त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम् ।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो,
भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः।।18।।
सुवर्णधारा-स्तोत्रं तत्, शङ्कराचार्य निर्मितम् ।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स कुबेरसमो भवेत् ।।

## भाषानुवाद

कलिका-लसित तमाल वक्ष ज्यों भ्रमरी अङ्ग लगाये।
हरि के रोमांचित उर में त्यों नेहिल आसन पाये।
जग के वैभव की विधायिनी, अग-जग मंगल शीला।
हम सब का शुभ करें मात, श्री सरसिज विहरण शीला।।1।।
सुरभि लोभ में ज्यों भ्रमरी सरसिज ऊपर मंडराये,
हरि के मुखमण्डल में त्यों ही शतशः आये जाये।



लल्जा और प्रणय से मिश्रित चल चितवन मनभावन,
श्री देवी की दृष्टि सौख्य दे, जीवन करे सुपावन।।2।।
सकल सुरों के अधिनायक, सुरपति के भी पददाता,
तेरे अर्ध अपाङ्ग मात मुररिपु के जो सुखदाता।।
इन्दीवर के मध्य सरिस नीलाभ नयन माँ तेरे,
कुछ निमेष उर वास करो माँ अधचितवन से मेरे।।3।।

अर्ध निमीलित नेत्र कमल ज्यों मधुरिपु के सुखकारी,
लोकान्तर सुख मूल मुदित जो अपलक शोभाकारी।
इकटक भावविभोर अधखुले श्रीमन मोद मनावें,
वे ही सुधर सुनेत्र अम्ब के मम उत्कर्ष बढ़ावें।।4।।
उर में कौस्तुभ मणि की आभा हरि की शोभाकारी,
मध्य नीलमणि हारावलि की सुभग कान्ति है न्यारी।
उस के मध्य कटाक्ष मातु तब नीलकान्ति हो जाता,
निज कटाक्ष से दूर करो दुख के कमलासनि माता।।5।।
मधु-कैटभरिपु वक्षःस्थल ज्यों नीलमेघ कजरारे,
विद्युद् वनिता सी विराजिता मात! निजासन डारे।
सकल-लोक जननी हरिवनिते! वन्दनीय श्रीमाता,
अम्ब करो कल्याण दयामयि भार्गवनन्दिनि माता।।6।।
कुछ अलसाई अर्ध दृष्टि मृदु-मन्थर चितवन तेरी।
शुभ प्रभाव से हरि के उर में उपजी प्रीति घनेरी।
काम भाव की दीप्त सजगता जिस चितवन का प्रतिफल,
वह कमनीया दृष्टि हमारी ओर करो मा अविकल।।7।।
दुष्कृत-आतप से ज्यों पीड़ित खग-शावक बेचारा,
दीनहीन गतिहीन अकिञ्चन फिरता मारा मारा।
हरि-प्राणयिनि तव कृपा-वायु का पा जावे अनुकूलन।
नयन-जलद धन घन वर्षण से धन्य करो मम जीवन।।8।।
जिसकी दयादृष्टि पाकर के प्राकृत जन तव सेवी,
देवलोक के उत्तम पद पर सुखवनिता उर सेवी।
विकसित सरासिज मध्यभाग सी अरुणिम आभा धारे।
कृपा-दृष्टि से पुष्टि करो माँ मम मनवांछित सारे।।9।।
सृष्टिकाल में ब्रह्मशक्ति, पालन से कमलारूपे,
प्रलय-समय के रुद्रशक्ति शशिशेखर-प्रिये अनूपे।
गीर्देवी गरुड़ध्वज भामिनि, शाकम्भरि हरिगामी।
हे त्रिलोकपति-भामिनि, तुमको बारम्बार नमामी।।10।।

शुभद-कर्मफल मूल प्रदायिनि, श्रुति सुरुपिणी माता।
सुभगे शुभगुण-वारिधिरूपे रतिरूपे जगमाता।
हे शतपत्र निकेते! तुम को नमन करूँ हे अम्बे!
हरि-प्रणयिनि! जगपोषिणि तुमको नमन करूँ जगदम्बे।।11।।

कमलोपम मुख छवि धारिण देवी नमो नमो ।
क्षीरोदधि जाते गुण अवदाते नमो नमो ।
हे सुधा-सोम सोदरे हिरण्ये नमो नमो ।
नारायण के उर मध्य शरण्ये नमो नमो ।।12।।

सरसिजनयने! नमन तुम्हारा निखिल समृद्धि प्रदाता।
रंक मात! तेरे वन्दन से राज्यविभव पा जाता।
दुरित-दलन में दक्ष दयामयि! सकलेन्द्रिय सुखकारी।
तव पद-नमन न मन विसराये इतनी विनय हमारी।।13।।

जिनकी दिव्य कटाक्ष-साधना साधक जन-कल्याणी।
धन-वैभव कामना-कामप्रद पाते जगके प्राणी।
श्रीहरि हृदय-निवासकारिणी हे जगतारिणि माता।
मैं मन-वचन-कर्म से निशिदिन तेरा ध्यान लगाता।।14।।

मात कमलवन में निवास तव, कर में कमल विराजे।
दिव्य धवलतम वसन सुगन्धित माल कण्ठ में राजे।
हरि की प्राण प्रिये! शुभकारिणि! त्रिभुवन भूति प्रदायिनि।
मुझ पर मुदित वरद कर धर दो हे सुख-शान्ति-विधायिनि।।15।।

दिग्गज कनक कुम्भ ले तुमको नित अभिषेकु करावें।
नभगंङ्गा का नीर सुपावन तन को सुख पहुँचाते।
सकल-लोक-अधिनायक प्राणे! जलधिसुते! जगरानी।
माँ प्रातस्त्य नमन है तुमको जगजननी जगजानी।। 16।।

कमलनयन-हरि प्राण प्रिये! तव करुणा है सुखकारी।
मैं करुणा का पात्र अकिञ्चन करुणा का अधिकारी ।
सकल कलुष कर दूर हृदय का कमले! मुझको तारो।
दया-तरंगित निज चितवन से मुझको मात निहारो।।17।।

शुचि लक्ष्मी का स्तवन नमन नित जन जन को सुखदाई।
त्रिद्धि-सिद्ध पग-पग पर माँ की देती खड़ी दिखाई।
वेदस्वरूपा रमा लोक-जननी के जोजन ध्यानी।
बुध-मण्डित सौभाग्य समन्वित माँ के भक्त अमानी।। 18।।

आदिशङ्कराचार्य-कृत स्तुत कमला कर ध्यान।
जो त्रिकार सुमिन करै, धनपति सम धनवान् ।।

M M M M M

# आरती

## भगवान शंकर-पार्वती की वन्दना

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तम् हृदयारवृन्दे, भवं भवानी सहितम् नमामी।।

## श्री गणेश जी की आरती

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महा देवा। जय0।।

पान चढ़े, फूल चढ़े, और चढ़े मेवा।
लड्डुवन का भोग लगे, सन्त करें सेवा।। जय0।।

एकदन्त दयावन्त, चार भुजाधारी।
मस्तक सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।। जय0।।

अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।। जय0।।

दीनन की लाज रखो, शम्भु सुत हमारी।
कामना को पूरी करो, जाउँ बलिहारी।। जय0।।

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
सूर श्याम शरण आये, सुफल कीजै सेवा।। जय0।।

## श्री महालक्ष्मी जी की आरती

भगवती लक्ष्मी–गणेश तथा पीठ में स्थित सभी देवों के अ"eW–प्रत्य"eW का पूजन हवन करने के बाद, आरती करें। एक थाली में स्वास्तिक चिह्न घृत मिश्रित सिन्दूर से दाहिने हाथ की अनामिका उँगली से अंकित कर अक्षत–पुष्प के आसन पर घृत–दीप रखकर जला दें। एक दूसरे पात्र में कपूर रखकर, उसी थाली में यथा स्थान रखकर जला दें। आरती–थाली का जल से प्रोक्षण करें और आसन पर खड़े होकर, शंख, घण्टानाद करते हुए आरती करें। आरती बाईं ओर से दाहिनी ओर घुमाते हुए क्रमशः

नीचे से ऊपर की ओर घुमाते रहें। आरती के अन्त में जल घुमाकर पृथ्वी पर छोड़े हाथ धो लें। आरती सब मिलकर गावें। लक्ष्मी जी की जय बोलें और माता लक्ष्मी पर पुष्प वर्षा करें।

ॐ जय लक्ष्मी माता, मइया जय लक्ष्मी माता।
तुम को निशि दिन सेवत, हर–विष्णू– धाता।। ॐ जय0।।
उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जग – माता
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।। ॐ जय0।।
दुर्गारूप निरंजनि, सुख – सम्पति दाता।
जो कोइ तुमको ध्यावत, ऋधि–सिधि–धनपाता।। ॐ जय0।।
तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।
कर्म– प्रभाव– प्रकाशिनि, भवनिधि की माता।। ॐ जय0।।
जिस घर में तुम रहती, सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता।। ॐ जय0।।
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान – पान का वैभव, सब तुमसे आता।। ॐ जय0।।
शुभ गुण – मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि – जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहिं पाता ।। ॐ जय0।।
आरति लक्ष्मी जी की, जो कोइ नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ।। ॐ जय0।।

***लक्ष्मी मइया की जय। गौरी–गणेश की जय। उमा–महेश की जय। आरती ले लें। यथा शक्ति द्रव्य आरती पात्र में डालें। माता को साष्टाश्में प्रणाम करें। शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः।***

**मन्त्र पुष्पाञ्जलि**–दोनों हाथों में पुष्प लेकर हाथ जोड़े और महालक्ष्मी जी पर चढ़ा दें और भाव निवेदन करते हुए कहें–

हे लक्ष्मी माता ! श्रद्धा, भक्ति और हृदयगत प्रेम से सिक्त, नाना प्रकार के सुरभित पुष्पों की यह पुष्पाञ्जलि आपकी सेवा में समर्पित हैं, इसे ग्रहण करें।

पुष्पाञ्जलि समर्पित करता हूँ।

**प्रदक्षिणा**–हाथ जोड़कर महालक्ष्मी जी की प्रदक्षिणा करें–और कहें (बाएँ से दाहिनी और तीन बार)

***हे देवि ! जन्म–जन्मान्तर में शरीर, वाणी और मन से मेरे द्वारा किये गये सारे पाप इस प्रदक्षिणा विधान से आप नष्ट कर दें। आप को बारम्बार प्रणाम है।***

**क्षमा–प्रार्थना**–हाथ जोड़कर प्रार्थना करें–



***हे परमेश्वरी माँ ! यदि आप की आराधना में कहीं भी अक्षर पद भ्रष्ट हो गया हो, कोई छन्द मात्राहीन हुआ हो, तो आप से प्रार्थना है कि आप क्षमा कर दें। हे देवि! आप मुझ पर प्रसन्न हों। मैं न तो आवाहन जानता हूँ, नही, विसर्जन की विधि जानता हूँ। मैं पूजा करना भी नहीं जानता हूँ। मैंने मन, वाणी और कर्म से जो भी आप का पूजन किया है, उसमें होने वाली त्रुटियों के लिए मुझे क्षमा करें।***

पुनः प्रणाम करके कहें–

***"हे देवि! यथाशक्ति किये गये मेरे इस पूजन से आप प्रसन्न हों"***

एक अंजलि जल छोड़ दें।

**त्राहि माम्**
**रक्ष माम्**
**पाहि माम्**

# श्री विष्णु जी की वन्दना

शान्ताकारं भुजगशयनम् पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभागमम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिर्विध्यानगम्यम्,
वन्दे विष्णुं भव भय हरणं सर्वलोकैकनाथम् ।।

M M M M M

# संक्षिप्त हवन–विधान

विधिवत् पूजन के बाद देवी जी का संक्षिप्त हवन सामग्री और कमलाक्ष (कमलगट्टा) और देषी घी के द्वारा हवन करें। हवन विधि इस प्रकार है–

हवन के लिए, भूमि, वेदी अथवा हवन पात्र को स्वच्छ करके जल का प्रोक्षण कर दें। भूमि या पात्र में रोली से त्रिकोण बनाकर उसके अन्दर 'रं' लिख दें। फिर अग्नि स्थापित करें।

**ध्यान**–चावल, फूल लेकर अग्निदेव का ध्यान करते हुए निम्नलिखित भाव–निवेदन करें और चावल फूल भूमि पर छोड़ दें– हे अग्निदेव! आप पितरों कव्य और देवताओं के हव्य को ग्रहण कर उन तक पहुँचाने वाले मुखस्वरूप हैं। आप को प्रणाम है। मैं आप का ध्यान करता हूँ। (अक्षत, पुष्प भूमि पर छोड़ दें)

**आवाहन**–पुनः अक्षत–पुष्प लेकर अग्निदेव का आवाहन करते हुए भाव–निवेदन करें–

सात ज्वालाओं से शोभित, अमित तेज वाले, देवों के मुख स्वरूप, हे अग्नि देव! मैं आप का आवाहन करता हूँ। आप इस वेदी में पधार कर मेरी आहुतियों को स्वीकार करें। (अक्षत–पुष्प छोड़ दें)

**अग्नि–पूजन**–जल, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, पूगीफल, दक्षिणा चढ़ाकर अग्नि–पूजन करें। (नैवेद्य के अतिरिक्त, पान–फूल आदि सामग्री वेदी के बाहर छोड़े, अग्नि में न छोड़े)

**प्रार्थना**–अक्षत–पुष्प लेकर अग्निदेव को प्रणाम करें।

**आहुति**–स्रुवा या आचमनी पात्र से सात बार अग्नि में घी की आहुति छोड़े और कहें : (प्रत्येक स्वाहा के बाद चम्मच में बचा हुआ घी दो कटोरी में जलभर कर एक बूंद घी न मम बोलकर पानी में गिराये)

1. **ॐ** प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये, न मम।
2. **ॐ** इन्द्राय स्वाहा, इदम् इन्द्राय, न मम।
3. **ॐ** अग्नये स्वाहा, इदम् अग्नये, न मम।
4. **ॐ** सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय, न मम।
5. **ॐ** भूः स्वाहा, इदं अग्नये, न मम।
6. **ॐ** भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।
7. **ॐ** स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।





ऊपर की सात घी की आहुतियों के बाद, अपने ऊपर जल छिड़कें।

इसके पश्चात् गौरी, गणेश, वरुण, नवग्रह, वास्तुदेव, इष्टदेव, कुलदेवादि की आहुति दे दें। इसके उपरान्त कमलाक्ष (कमलगट्टा) को घी में डुबोकर ''महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा'' कहकर महालक्ष्मी जी को 108 बार आहुति दें।

जिस देव को आहुति देना हो, उनका नाम लेकर ''देवाय (देव्यै) नमः स्वाहा'' कहकर आहुति छोड़ना चाहिए। जैसे 'सूर्य' के लिए तो ''सूर्य देवाय स्वाहा'' कहेंगे। 'दुर्गा' जी के लिए ''दुर्गा देव्यै स्वाहा'' कहेंगें। 'श्रीसूक्त' के एक–एक मन्त्र को पढ़कर अन्त में 'स्वाहा' कहते हुए हवन करना शुभ है अथवा 'श्रीसूक्त पीयूषम्' की प्रत्येक पंक्ति के अन्त में 'स्वाहा' कहकर आहुति देनी चाहिए।

**पूर्णाहुति हवन**–नारियल में छिद्र करके घी भरें नारियल में लाल वस्त्र अथवा रक्षासूत्र ही लपेटकर, बचीं हुई हवन सामग्री, सुपारी, पान में रखकर, उसे अग्नि में सीधे रख दें और कहें–''हे महालक्ष्मी जी! मैं पूर्णाहुति–समर्पण करता हूँ।''

**घृतधारा–समर्पण**–कटोरी में हवन से बचा हुआ घी अग्नि में छोड़ दें। अग्नि देव को प्रणाम करें।

**त्रायुष्करण**–अपनी दाहिने हाथ की अनामिका उँगली से हवन कुण्ड की राख निर्देशानुसार अंगों में लगावें–

1. मस्तक में
2. ग्रीवा में
3. दाहिने बाहु मूल में
4. हृदय में

हाथ धोकर आरती निर्देशानुसार करें। आरती के बाद हाथ धो लें।

M M M M M

# विसर्जन

**अग्नि विसर्जन**—अक्षत पुष्प लेकर वेदी के बाहर छोड़ते हुए अग्निदेव का विसर्जन करें।

**विसर्जन**—अन्त में दाहिने हाथ में अक्षत लेकर, नूतन गणेश—लक्ष्मी की प्रतिमा को छोड़कर के, अन्य सभी आवाहित और प्रतिष्ठित एवं पूजित देवों पर अक्षत छिड़कें और विसर्जन करें तथा निम्नलिखित भाव—निवेदन करें—

***"नूतन गणेश और, लक्ष्मी को छोड़कर सभी आवाहित देवता मेरी पूजा को ग्रहण करके, मेरी मनोकामना की सिद्धि और पुनः आगमन के लिए अपने—अपने लोक को जायँ।" गत वर्ष की लक्ष्मी—गणेश प्रतिमाओं को किसी प्रवाहित जल शुभ दिन शुभ समय में छोड़वा दें। घर या किसी देव स्थान में न रखें।***

M M M M M



# पर्व कथा

## गोबर्धन—कथा

कार्तिक शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को 'गोबर्धन पूजा' नाम का पर्व मनाया जाता है। इस पर्व में स्त्रियाँ गोबर से पर्वताकार आकृति बनाकर पूजा करती हैं। सन्ध्या समय में विविध व्यंजनों का भोग लगाकर दीपदान करती हुई गोबर निर्मित गोबर्धन की परिक्रमा करती हैं।

### कथा

एक पौराणिक आख्यान के अनुसार प्राचीन काल में दीपावली के दूसरे दिन व्रज मण्डल में इन्द्र की पूजा की परम्परा का प्रचलन था। व्रजवासी इन्द्र को वर्षा का कारक देव और मेघों का राजा मानकर उनको पूजते थे। व्रज की जनता पुरुषार्थ न करके केवल देवमातृक बनी हुई थी। भगवान् कृष्ण ने व्रजवासियों को भौतिक साधनों का महत्व बताते हुए, पुरुषार्थ की प्रेरणा दी और इन्द्र की पूजा रोककर गोबर्धन की पूजा प्रारम्भ करा दी। इस पर इन्द्र ने कुपित होकर मूसलाधार वर्षा शुरू करा दी। भगवान् कृष्ण ने जल, वृक्ष और वनस्पतियों से सुशोभित गोबर्धन पर्वत की पूजा प्रारम्भ करा दी। अतिवृष्टि से त्रस्त हुए व्रजवासियों की और गोवंश की रक्षा के लिए गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठिका से उठाकर व्रजवासियों की रक्षा की। इन्द्रदेव का कोप शान्त हुआ और उन्होनें कृष्ण जी से क्षमा माँगी। तभी से पूरे भारत में सुख समृद्धि के प्रतीक गोबर्धन पर्वत का प्रतिरूप गोबर से बनाकर पूजा का प्रचलन हुआ। वस्तुतः गोबर कृषकों का सबसे अमूल्य धन है। वह उर्वरक के रूप में हमारा अन्नदाता है, जीवन दाता है। ये पर्वत हमारे लिए पूज्य हैं। इन पर उगने वाले वृक्ष केवल फल नहीं देते, बल्कि वर्षा और मानसून के कारक भी है। गोबर्धन पूजा पर्व का इतिहास अतिरोचक और प्रेरणाप्रद है, जिसको आज भी भारतवासी मनाते चले आ रहे हैं।

### शिक्षा

भारत एक उत्सव प्रिय देश है। यहाँ एक उत्सवों के मनाने का अपना एक प्रबल और उद्देश्यपूर्ण आधार होता है। यह पर्व वर्षा की समाप्ति और शरद् ऋतु के प्रारम्भ में मनाया जाता है। यह समय वर्षा के देवता इन्द्र के मनाने का नहीं है। बल्कि वर्षा से उगे हुए वृक्षों और वनस्पतियों की रक्षा का है। यह त्योहार हमें शिक्षा देता है कि हम वृक्षों, वनस्पतियों और उनके आधार पर्वतों के प्रति पूज्य भाव रखें। गोवंश के प्रति सम्मान का भाव बनायें। इनकी रक्षा से समाज सुखी रहेगा। यह पूज्य भावना समूचे

राष्ट्र को पर्यावरण–प्रदूषण की समस्या से त्राण दिलायेगी। गोबर्धन पूजा का यह त्योहार इस राष्ट्र के उन्नयन में प्रेरक का कार्य करेगा। गोबर्धन गिरि और गिरिधारी की जय।

## भैया–दूज–कथा

यह त्यौहार कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वितीया को मनाया जाता है। यह भाई–बहन के प्रेम का प्रतीक हैं। आज के दिन भाई–बहन को साथ–साथ यमुना–स्नान करना, बहन द्वारा भाई को तिलक लगवाना तथा बहन के घर भोजन करना शुभ माना जाता है। इस दिन बहन भाई को टीका लगाकर उसके दीर्घायु होने की कामना करती है। बहन भाई के लिए मंगलकामना तथा अपने सुहाग के लिए यम से प्रार्थना करती हैं। ऐसी मान्यता है कि आज के दिन यमुना जी ने अपने भाई यमराज को भोजन कराया था। इसीलिए इसे यमद्वितीया भी कहते हैं। लोग इस पर्व में बहनों को स्वर्ण, आभूषण वस्त्र आदि देकर उनकी शुभकामना लेते हैं।

## सन्दर्भित–कथा

सूर्य भगवान् की स्त्री का नाम संज्ञा देवी था। इनकी दो सन्ताने थीं, पुत्र यमराज और पुत्री यमुना थीं। संज्ञा देवी सूर्य के उत्ताप को न सह सकने के कारण, उत्तरी ध्रुव प्रदेश में छाया बनकर रहने लगी। उसी छाया से ताप्ती नदी और शनि का जन्म हुआ। छाया से देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमारों का जन्म हुआ था। ऐसी प्रसिद्धि है।

इधर छाया ने यम और यमुना के साथ सौतेला जैसा व्यवहार शुरू कर दिया, जिससे खिन्न होकर यम ने 'यमपुरी' नाम की एक नई नगरी बसाई। यमुना भी यम के पास रहने लगीं। यम इसी नगरी में पापियों को दण्ड दिया करते थे, जिसे देखकर यमुना ने यमपुरी छोड़ दिया और गोलोक में रहने लगीं।

पर्याप्त समय बीत जाने पर एक बार यम को अपनी बहन यमुना की याद आई और उन्होनें दूतों को भेजकर बहुत खोजवाया किन्तु यमुना का पता नहीं लग सका। तब यमराज स्वयं गोलोक गये और खोजने पर विश्राम घाट में यमुना जी से भेंट हो गई। भाई से मिलकर यमुना हर्ष विभोर हो गईं और भाई का भव्य स्वागत कर, उन्हें भोजन कराया। यमराज ने प्रसन्न होकर यमुना से वर माँगने का आग्रह किया।

यमुना ने कहा–कि भैया यदि मुझे वर देना चाहते हो तो यह वर दे दो कि मेरे जल में नहाने वाले नर–नारियों को यमपुरी न जाना पड़े।

वर कठिन था, उससे तो यमपुरी का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता। अतः यमुना ने भाई के असमंजस को देखकर कहा कि भैया आप चिन्तित न हों, मुझे यह वरदान दें कि आज के दिन जो भाई अपनी बहन के घर भोजन करके विश्राम घाट स्थित मेरे





जल में नहा लें, उन्हें यमपुरी न जाना पड़े। यमराज ने स्वीकार करते हुए कहा कि जो भाई इस तिथि को बहन के घर भोजन नहीं करेंगें उन्हीं को मैं यमपुरी ले जाऊँगा और जो तुम्हारे जल में स्नान कर लेंगे, उन्हें स्वर्ग प्राप्त होगा। तभी से भाई–बहन के प्रेम का प्रतीक यह त्योहार मनाया जाता है। यह पर्व युगों तक भाई–बहन के दिव्य प्रेम को अमरता प्रदान करता रहेगा।

M M M M M